दिनांक १० अक्टूबर एवं १३ नवम्बर, २००३ को प्रातः १२.०० बजे विद्या मंदिर में हिन्दी पाठ्यक्रम समिति की बैठक का कार्यवाही विवरण

सर्वप्रथम दिनांक १० अक्टूबर, २००३ को प्रातः १२.०० बजे हिन्दी पाठ्यक्र समिति की बैठक विद्या मंदिर, वनस्थली विद्यापीठ में सम्पन्न हुई। बैठक में सदस्यों की उपस्थिति इस प्रकार रही :

१.	प्रो० के०पी० सिंह	:	बाह्य सदस्य
२.	प्रो० नित्यानंद तिवारी	:	बाह्य सदस्य
३.	डॉ० गरिमा श्रीवास्तव	:	आंतरिक सदस्य
४.	डॉ० मीनाक्षी श्रीवास्तव	:	आंतरिक सदस्य
५.	डॉ० आद्या	:	आंतरिक सदस्य
५.	डॉ० देवेन्द्र गुप्ता	:	आंतरिक सदस्य
६.	डॉ० पन्ना	:	संयोजक

उपरोक्त मीटिंग में सदस्यों की आम सहमति न होने के कारण बाहर के दोनों विशेषज्ञों ने कहा कि वे ३१ अक्टूबर तक पाठ्यक्रम का प्रारुप स्वयं भेजेंगे। इसके बाद नवम्बर में दुबारा पाठ्यक्रम समिति की बैठक होगीं। तत्पश्चात् पाठ्यक्रम समिति की बैठक दिनांक १३ नवम्बर, २००३ को सम्पन्न हुई जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे:-

१.	डॉ० मीनाक्षी श्रीवास्तव	:	आंतरिक सदस्य
२.	डॉ० आद्या	:	आंतरिक सदस्य
३.	डॉ० देवेन्द्र गुप्ता	:	आंतरिक सदस्य
४.	डॉ० गरिमा श्रीवास्तव	:	संयोजक

नोट- डॉ० गीता बुधानी (आंतरिक सदस्य) इस बैठक में अनुपस्थित रहीं।

१. पाठ्यक्रम समिति की बैठक में वनस्थली विद्यापीठ के हिन्दी (स्नातकोत्तर) विभाग के पाठ्यक्रम को सेमेस्टर व्यवस्था के अंतर्गत लाने के लिए पाठ्यक्रम प्रस्तुत एवं संस्तुत किया गया। पाठ्यक्रम को अद्यतन बनाने के लिए व्यावसायिक प्रश्न पत्र भी जोड़े गए। एम०ए० पूर्वार्द्ध के दस प्रश्न पत्र एवं एम०ए० उत्तरार्ध के दस प्रश्न पत्र होंगे। प्रत्येक सत्र में ५-५ प्रश्न पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न पत्र ७५ अंकों का होगा। अंक विभाजन इस प्रकार होगा :-

सतत परीक्षा	:	१५ अंक
कक्षा आंतरिक परीक्षा	:	१० अंक
अथवा आलेख लेखन		
मुख्य परीक्षा	:	५० अंक

२. व्यावसायिक प्रश्न पत्र अनुवाद सिद्धान्त को वैकल्पिक अध्ययन में जोड़ा गया।

३. लघु शोध प्रबंध के स्थान पर एक शोध आलेख (४० - ५०) पृष्ठ एम०ए० उत्तरार्द्ध के अंतिम सेमेस्टर में प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा, ऐसा निर्णय लिया गया।

बैठक आम सहमति के साथ समाप्त हुई।

प्राक्कथन

पाठ्यक्रम को अद्यतन बनाए रखना विश्वविद्यालयों के सभी विभागों का अनिवार्य अकादमिक कार्य है। इस पाठ्यक्रम के संबंध में दो बातों पर विशेष ध्यान रखना समुचित होगा।

१. नए विकासमान दृष्टिकोण के प्रति अभिमुखता

2. नयी उभरी ज्ञान सामग्री का समावेश

मानविकी विधाओं में दृष्टिकोण का पर्याप्त महत्व होता है। उनमें आधुनिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का तात्पर्य होता है- ऐतिहासिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में समस्त ज्ञान का आकलन तथा विश्लेषण- मूल्यांकन करना। उदाहरण के लिए यदि साहित्य का अध्ययन किया जा रहा है तो विभिन्न कालों की साहित्य-रचना की अंतर्वस्तु, प्रारुप और भाषा में निरन्तरता और परिवर्तन के मुख्य बिंदुओं की पहचान ज्यादा महत्वपूर्ण मुद्दा बने-काव्यशास्त्र को भी ऐतिहासिक, सामाजिक विकास के विशेष संदर्भ में पढ़ा जाए, उसे आत्यंतिक और स्थिर प्रमाण के रुप में न स्वीकार किया जाए। काव्य शास्त्रीय आधार पर साहित्य का अध्ययन लक्षण-उदाहरण से अधिक कुछ न होगा। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस दृष्टिकोण और अध्ययन-पद्धति को नकार दिया था। यही कारण है कि आधुनिक साहित्यिक अध्ययन में इतिहास अर्थात् काव्य- शास्त्रेतर परिस्थितियों और शक्तियों का महत्व बढ़ता चला गया, साहित्य मात्र भाव और रस की वस्तु नहीं रह गया, वरन् भाव और अनुभूति, संपूर्ण जीवन पर पड़ने वाले अनेक दबावों (राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि से निर्मित) की अनुभूति संरचना की समझ बन गया। साहित्य के समाज-शास्त्रियों के अनुसार साहित्यिक संरचनाएं अपने युग के समाज मे निहित होती हैं। ये संरचनाएं विभिन्न परिस्थितियों के संघात से मानसिक स्तर पर अधिक जटिल होती हैं। यह जटिलता अनुकूल और प्रतिकूल शक्तियों के घात-प्रतिघात से निर्मित होती है। इसलिए ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य - दृष्टि, और सामाजिक, मानसिक विश्लेषणात्मक पद्धति- आधुनिक पाठ्यचर्चा के लिए एक प्रकार से अनिवार्य है।

आज कोई भी समाज अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भों और दबावों से अछूता नहीं रह सकता, इसी प्रकार साहित्य भी नितान्त अलग-थलग होकर विकसित नहीं हो सकता। फलतः हमारे पाठ्यक्रम का एक परिप्रेक्ष्य राष्ट्रीय है तो दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय भी है। प्रस्तुत समाज में जिस तरह व्यावसायिक शक्तियों का प्रवेश हो रहा है उसका मुकाबला और उसकी अनुकूलता में होने के लिए पाठ्यक्रम का एक स्तर व्यावसायिक बनाना जरुरी हो गया है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पाठ्यक्रम को ऐतिहासिक अनुक्रम में विभाजित किया गया है - सेमेस्टर (सत्र) की योजना की गई है और स्नातकोत्तर स्तर पर व्यावसायिक ज्ञान संबंधी शिक्षण के प्रश्न पत्र रखने के व्यवस्था की गई है।

आशा है कि यह पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशों और आज के सामाजिक लक्ष्य के अनुकूल प्रासंगिक हो उठेगा।

एम०ए० (हिन्दी) पाठ्यक्रम
(सन् २००४ तथा उसके बाद प्रवेश लेने वालों के लिए)
पूर्वार्द्ध २००४, उत्तरार्द्ध २००५

एम०ए० पूर्वार्द्ध २००४

पाठ्यक्रम

सेमेस्टर -ƐƐ — अंक : घण्टे :
सत्र - ƐƐ — सतत् मूल्यांकन : २५ अंक
मुख्य परीक्षा : १००

प्रश्नपत्र - १ आदिकालीन काव्य
प्रश्नपत्र - २ भक्तिकालीन काव्य
प्रश्नपत्र - ३ रीतिकालीन काव्य
प्रश्नपत्र - ४ आधुनिक कविता (छायावाद तक)
प्रश्नपत्र - ५ कथा साहित्य

सेमेस्टर - II[ed]
सत्र II[ed]

प्रश्नपत्र - १ कम्प्यूटर शिक्षण
प्रश्नपत्र - २ निबंध साहित्य और अन्य गद्य विधाएं
प्रश्नपत्र - ३ भारतीय काव्यशास्त्र
प्रश्नपत्र - ४ भाषा विज्ञान
प्रश्नपत्र - ५ हिन्दी भाषा

एम०ए० पूर्वार्द्ध
प्रश्नपत्र - १
आदिकालीन काव्य

सत्र-१
सेमेस्टर ƐƐ — सतत् मूल्यांकन : २५ अंक
मुख्य परीक्षा : १०० अंक

समय- ३ घण्टे

निर्देश : खण्ड ३ के डक.और डख. में से एक -एक व्याख्या आंतरिक विकल्प के साथ पूछी जाएगी ।
१४ृ२८

खण्ड १,२,३ डक तथा ख.से एक -एक प्रश्न आंतरिक विकल्प के साथ पूछा जाएगा ।
१८ृ४७२

भाग - १ संस्कृत साहित्य का इतिहास (संक्षिप्त)
संस्कृत साहित्य की पूर्व पीठिका

भाग - २ संस्कृत साहित्य की विधाओं का संक्षिप्त परिचय
महाकाव्य, गीतिकाव्य, नाटक और गद्य का विकास

भाग - ३ ङक .चन्दवरदायी (पृथ्वीराज रासो)
कयमास ङसं०.माता प्रसाद गुप्त

ङख .विद्यापति की पदावली - संपादक रामवृक्ष बेनीपुरी
वन्दना - १,२,३,
बसन्त– १७४, १७५, १७६, १७९, १८०, १८४.
विरह - १८७, १८८, १९१, १९२, १९५, १९९, २००, २०२ - २०५

सहायक ग्रंथ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास - बलदेव उपाध्याय
2. प्राकृत– अपभ्रंश साहित्य और उसका हिन्दी साहित्य पर प्रभाव - राम सिंह तोमर
3. हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग - नामवर सिंह
4. हिन्दी काव्यधारा (भूमिका) - राहुल सांकृत्यायन
5. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. आदिकालीन हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पीठिका - राममूर्ति त्रिपाठी
7. राजस्थानी भाषा और साहित्य - मोतीलाल मेनरिया
8. विद्यापति - शिवप्रसाद सिंह
9. विद्यापति - आनन्द प्रकाश दीक्षित

एम०ए० पूर्वार्द्ध

भक्तिकालीन काव्य

सत्र-१
प्रश्नपत्र -२ सतत् मूल्यांकन : २५ अंक
समय- ३ घण्टे मुख्य परीक्षा : १०० अंक

निर्देश : खण्ड १,२ तथा ३ के ङक और ख .से एक -एक व्याख्या आंतरिक विकल्प के साथ पूछी जाएगी ।

७४२८

खण्ड १,२,३ ङक और ख .से एक -एक प्रश्न आंतरिक विकल्प के साथ पूछा जाएगा ।

१८४७२

भाग - १ कबीर ग्रंथावली - सं० पारसनाथ तिवारी, संस्करण १९६१
पद संख्या : १, ५, ८, ११, १२, २७, ३६, ३८, ४३, ४९, ५०, ६८, ८४, ९९, १०४, (१५ पद)

भाग - २ पद्मावत - सं० माताप्रसाद गुप्त
मानसरोदक खण्ड, नागमति सुआ खण्ड, नागमति वियोग खण्ड - उपसंहार

भाग - ३ ङ. भ्रमरगीत सार - सं० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
संस्करण १९६३, प्रकाशक नागरी प्रचारिणी सभा काशी

पद सं० - ४, ७, १८, २२, २३, २८, ३०, ३४, ४१, ४२, ५७, ५८, ६०, ६१, ६९, ७०, ७६, ७८, ८२, १२१. (२० पद)

डग. अयोध्याकाण्ड (रामवनगमन प्रसंग)
गीता प्रेस का संस्करण)

सहायक ग्रंथ

1. कबीर - डॉ० विजयेन्द्र स्नातक
2. कबीर साहित्य चिंतन - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
3. हिन्दी की निर्गुण काव्यधारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि - डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत
4. भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
5. हिन्दी सूफीकाव्य की भूमिका - रामपूजन तिवारी
6. मध्ययुगीन रोमांचक आख्यान - डॉ० नित्यानन्द तिवारी
7. भक्ति आन्दोलनः इतिहास और संस्कृति - (संपादक) डॉ० कुँवरपाल सिंह
8. भक्ति आन्दोलन इतिहास और लोक संस्कृति - (सं) डॉ० कुँवरपाल सिंह
9. सूर और उनका साहित्य - डॉ० हरवंशलाल शर्मा
10. सूर के पद और रचना दृष्टि - डॉ० विजय बहादुर सिंह
11. भक्ति काव्य की सामाजिक -सांस्कृतिक चेतना - डॉ० प्रेमशंकर
12. सूरदास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
13. सूरदास - ब्रजेश्वर शर्मा
14. भ्रमरगीत काव्य और उसकी परंपरा - स्नेहलता श्रीवास्तव
15. तुलसीदास - रामचन्द्र शुक्ल
16. तुलसी काव्य मीमांसा - उदय भानु सिंह
17. तुलसी दर्शन मीमांसा - उदय भानु सिंह
18. तुलसी : आधुनिक वातायन - (संपादक) डॉ० रमेश कुन्तल मेघ

एम०ए० पूर्वार्द्ध

रीतिकालीन काव्य

सत्र-१

प्रश्नपत्र -३ सतत् मूल्यांकन : २५ अंक

समय- ३ घण्टे मुख्य परीक्षा : १०० अंक

निर्देश : खण्ड १, २ डक और ख., ३ से एक -एक व्याख्या आंतरिक विकल्प के साथ पूछी जाएगी।

खण्ड १, २ ङक और ख., ३ से एक -एक प्रश्न आंतरिक विकल्प के साथ पूछा जाएगा।

१८४७२

भाग - १ बिहारी रत्नाकर, संपादक जगन्नाथ दास रत्नाकर
दोहा सं० - १, २, ५, ७, ९, १०, १३, १५, २१, २२, २८, ४६, ५०, ५१, ५५, ६५, ६९, ७१, ७३, ७८, ८५, ९४, ९५, ९९, १०६, १०९, १११, १२०, १२३, १२४, १२६, १८८, १९१, १९२, २०१, २०३, २०७, २१९, २२१, २२२, २२७, २३८, २५१, २८०, २९५, ३००, ३०३, ३३५, ३४७, (पचास दोहे)

भाग - २ (क) मतिराम - ललित ललाम, मतिराम ग्रंथावली संपा. पं. कृष्णबिहारी मिश्र
आरंभ के ५० छंद

(ख) घनानंद - घनानंद ग्रंथावली - सं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र
सुजानहित के आरंभिक - ५० छंद

भाग - ३ भूषण - शिवाबावनी
आरंभ के ३० छंद

सहायक ग्रंथ

1. बिहारी - (सं०) ओम प्रकाश
2. बिहारी का नया मूल्यांकन - डॉ० बच्चन सिंह
3. बिहारी मीमांसा - डॉ० राम सागर त्रिपाठी
4. बिहारी का काव्य लालित्य - डॉ० रमाशंकर तिवारी
5. रीति काव्य की भूमिका - डॉ० नगेन्द्र
6. हिन्दी रीति साहित्य - डॉ० भगीरथ मिश्र
7. रीति काव्य - संग्रह - जगदीश गुप्त
8. घनानंद और स्वछन्द काव्यधारा - मनोहर लाल गौड़

एम०ए० पूर्वार्द्ध
आधुनिक कविता
(छायावाद तक)

सत्र-१

प्रश्नपत्र - ४

सतत् मूल्यांकन : २५ अंक
मुख्य परीक्षा : १०० अंक

निर्देश : खण्ड १, २ तथा ३ के ङक और ख. से एक -एक व्याख्या आंतरिक विकल्प के साथ पूछी जाएगी।

७४२८

खण्ड १, २, ३ ङक और ख.से प्रत्येक से एक -एक प्रश्न आंतरिक विकल्प के साथ पूछा जाएगा।

१८४७२

भाग - १ मैथिलीशरण गुप्त - साकेत (नवम सर्ग)

भाग - २ जयशंकर प्रसाद - कामायनी (चिंता और श्रद्धा सर्ग)

भाग - ३ (क) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - राग विराग, राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, वह तोड़ती पत्थर

(ख) महादेवी वर्मा - परिक्रमा (धूप - सा तन, विरह का जलजात जीवन, रश्मियों की छाया में, दीप तेरे जल अकम्पित, चुभते ही तेरा अरुण बाण)

सहायक ग्रंथ

1. साकेत : एक अध्ययन - डॉ० नगेन्द्र
2. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण - डॉ० रामविलास शर्मा
3. अतीत का रंग: मैथिलीशरण गुप्त - प्रभाकर श्रोत्रिय
4. जयशंकर प्रसाद - नन्द दुलारे वाजपेयी
5. कामायनी के अध्ययन की समस्याएं - डॉ० नगेन्द्र
6. कामायनी: एक पुनर्विचार - गजानन माधव मुक्तिबोध
7. छायावाद और कामायनी - डॉ० तारकनाथ बाली
8. कामायनी दर्शन - विजयेन्द्र स्नातक, कन्हैयालाल सहल
9. निराला की साहित्य-साधना (खंड १, २, ३) - राम विलास शर्मा
10. क्रान्तिकारी कवि निराला - बच्चन सिंह
11. महाप्राण निराला - गंगा प्रसाद पाण्डेय
12. निराला - राम विलास शर्मा
13. महादेवी के काव्य में लालित्य योजना - डॉ० राधिका सिंह
14. महादेवी - इन्द्रनाथ मदान
15. छायावाद - नामवर सिंह
16. छायावाद के आधार स्तम्भ - गंगा प्रसाद पाण्डेय
17. हिन्दी स्वच्छन्तावादी काव्य - डॉ० प्रेमशंकर
18. छायावाद: उत्थान, पतन, पुनर्मूल्यांकन - डॉ० देवराज
19. निराला - आत्महन्ता आस्था - दूधनाथ सिंह
20. चारलंबी कविताओं का रचना विधान - नंदकिशोर नवल

एम०ए० पूर्वार्द्ध

कथा साहित्य

सत्र - १

प्रश्नपत्र - पंचम

सतत् मूल्यांकन : २५

मुख्य परीक्षा : १००

निर्देश : खण्ड १, २, ३ की सभी पाठ्य पुस्तकों से एक -एक प्रश्न तथा एक-एक व्याख्या आंतरिक विकल्प के साथ पूछी जाएगी।

७४२८

परीक्षार्थी को कोई चार व्याख्याएँ तथा चार प्रश्न करने होंगे।

१८४७२

भाग - १

(क) गोदान - प्रेमचंद

(ख) मैला आंचल - फणीश्वरनाथ रेणु

भाग - २ शेखर: एक जीवनी (भाग - १, भाग - २) - अज्ञेय

भाग - ३ (क) त्यागपत्र - जैनेन्द्र

(ख) हिन्दी कहानियाँ

प्रेमचंद, यशपाल, अज्ञेय, अमरकांत, कृष्णा सोबती (पूस की रात, परदा, रोज, जिंदगी और जोंक, सिक्का बदल गया)

सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी उपन्यास - डॉ० शिवनारायण श्रीवास्तव
2. हिन्दी उपन्यास: सामाजिक चेतना - डॉ० कुँवरपाल सिंह
3. प्रेमचन्द और जनवादी साहित्य की परम्परा - डॉ० कुँवरपाल सिंह
4. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद - डॉ० त्रिभुवन सिंह
5. प्रेमचन्द और उनका युग - डॉ० रामविलास शर्मा
6. प्रेमचन्द प्रतिभा - डॉ० इन्द्रनाथ मदान
7. हिन्दी उपन्यास: पहचान और परख - डॉ० इन्द्रनाथ मदान
8. हिन्दी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा - रामदरश मिश्र
9. हिन्दी उपन्यास: बदलते संदर्भ - डॉ० शशि भूषण सिंहल
10. उपन्यास और लोक जीवन - रॉल्फ फाक्स
11. आज की कहानी - डॉ० इन्द्रनाथ मदान
12. कहानी: नयी कहानी - डॉ० नामवर सिंह
13. नयी कहानी की भूमिका - कमलेश्वर
14. हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया - डॉ० परमानन्द श्रीवास्तव
15. एक दुनिया समानान्तर - राजेन्द्र यादव
16. नयी कहानी: सन्दर्भ और प्रकृति - डॉ० देवीशंकर अवस्थी
17. समकालीन कहानी की पहचान - नरेन्द्र मोहन
18. हिन्दी उपन्यासों में बौद्धिक विमर्श - गरिमा श्रीवास्तव
19. उपन्यास का पुनर्जन्म — परमानन्द श्रीवास्तव
20. प्रेमचन्द के उपन्यास : कथा - संरचना - मीनाक्षी श्रीवास्तव

सत्र - २ **एम०ए० पूर्वार्द्ध**

प्रश्नपत्र - प्रथम

सतत् मूल्यांकन : २५
मुख्य परीक्षा : १००

कम्प्यूटर शिक्षण

पाठ्यक्रम बाद में प्रस्तुत किया जाएगा।

एम०ए० पूर्वार्द्ध

निबन्ध साहित्य और अन्य गद्य विधाएं

सत्र - २

प्रश्नपत्र - द्वितीय सतत् मूल्यांकन : २५

समय - ३ घण्टे मुख्य परीक्षा : १००

निर्देश : खण्ड १, २, ३ तथा (क, ख) में से एक -एक प्रश्न तथा एक-एक व्याख्या आंतरिक विकल्प के साथ पूछी जाएगी। परीक्षार्थी को कोई चार व्याख्याएँ तथा चार प्रश्न करने होंगे।

७४२८
१८४७२

भाग - १ - निबंध

(ग) श्रीमान का स्वागत - बालमुकुन्द गुप्त
(ग) श्रद्धा और भक्ति - रामचन्द्र शुक्ल
(ग्ग) कुटज - हजारीप्रसाद द्विवेदी

भाग - २ - जीवनी

आवारा मसीहा - विष्णु प्रभाकर

भाग - ३ संस्मरण:

(क) स्मृति की रेखाएं - महादेवी वर्मा

- रिपोर्ताज

(ख) तूफानों के बीच - रांगेय राघव

सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी का गद्य साहित्य - डॉ० रामचन्द्र तिवारी
2. हिन्दी वाड्.मय: बीसवीं शताब्दी - डॉ० नगेन्द्र
3. हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार - डॉ० द्वारिका प्रसाद सक्सेना
4. हिन्दी साहित्य की नवीन विधाएं - डॉ० कैलाश चन्द्र भाटिया
5. हिन्दी साहित्य विधाएं और दिशाएं - डॉ० शशि भूषण
6. गद्य की नयी विधाओं का विकास - डॉ० माजदा असद
7. आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका - डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
8. प्रेमचन्द और उनका युग - डॉ० रामविलास शर्मा
9. महादेवी का गद्य साहित्य - डॉ० मक्खन लाल शर्मा

११. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि - डॉ० आद्या वाजपेयी

सत्र - २ एम०ए० पूर्वार्द्ध

प्रश्नपत्र - तृतीय— भारतीय काव्यशास्त्र सतत् मूल्यांकन - २५
मुख्य परीक्षा - १००

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में से कुल पाँच प्रश्न आन्तरिक विकल्प के साथ (२०-२० अंकों के) पूछे जाएगें। अन्तिम प्रश्न में १०-१० अंकों की दो टिप्पणियाँ पूछी जाएंगी।

भाग - १ (क) काव्य लक्षण
(ख) काव्य हेतु
(ग) काव्य प्रयोजन

भाग - २ (क) (i) रस सिद्धान्त - रस का स्वरुप
(ii) रस की परिभाषा, रस के अंग, प्रकार

(ख) (i) रस निष्पत्ति
(iii) साधारणीकरण

(ग) (i) अलंकार सिद्धान्त - स्थापनाएं और मूल्यांकन,
अलंकारों का वर्गीकरण
(ii) रीति सिद्धान्त - स्थापनाएँ और मूल्यांकन, वामन का गुण, विवेचन और उसकी समीक्षा, गुण-रीति, संबंध, रीति भेद

भाग - ३ ध्वनि सिद्धान्त - ध्वनि का स्वरुप, ध्वनि सिद्धान्त की स्थापना (आनन्दवर्धन के अनुसार) ध्वनि का महत्व (उत्तम काव्य) के प्रमुख भेद: गुणीभूत व्यंग्य (मध्यम काव्य) के प्रमुख भेद: चित्रकाव्य (उधम काव्य)

सहायक ग्रंथ

१.	भारतीय साहित्य शास्त्र	-	बलदेव उपाध्याय
२.	भारतीय काव्य शास्त्र	-	संपा. उदयभानु सिंह
३.	काव्य तत्व विमर्श	-	राममूर्ति त्रिपाठी
४.	भारतीय काव्य शास्त्र	-	सत्यदेव चौधरी
५.	रस सिद्धान्त	-	नगेन्द्र
६.	भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका	-	नगेन्द्र
७.	काव्य शास्त्र	-	भगीरथ मिश्र
८.	रस सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र	-	निर्मला जैन
९.	रस मीमांसा	-	रामचन्द्र शुक्ल
१०.	भारतीय काव्यशास्त्र	-	गोविन्द त्रिगुणायत
११.	भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन	-	डॉ० विश्वम्भर नाथ उपाध्याय
१२.	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र	-	डॉ० गणपति चन्द्रगुप्त

सत्र - २ **एम०ए० पूर्वार्द्ध** **सतत् मूल्यांकन - २५**
प्रश्नपत्र - चतुर्थ **भाषाविज्ञान** **मुख्य परीक्षा - १००**

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में से कुल पाँच प्रश्न आन्तरिक विकल्प के साथ (२०-२० अंकों के) पूछे जाएगें। अन्तिम प्रश्न में १०-१० अंकों की दो टिप्पणियाँ पूछी जाएंगी।

२०५१००

भाग - १ भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार
भाषा संरचना और भाषिक प्रकार्य
भाषा विज्ञान : स्वरुप एवं व्याप्ति: अध्ययन की दिशाएं- वर्णनात्म, ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक

भाग - २ (क) ध्वनि-विज्ञान: ध्वनि अध्ययन के आयाम

(ग) उच्चारणात्मक (गग) प्रसारणात्मक (गगग) श्रवणात्मक

(ख) स्वनिम विज्ञानः स्वनिम की अवधारणाः रुपिम और संहप

भाग - ३ (क) वाक्य विज्ञानः वाक्य, उपवाक्य और पदबंध, आंतरिक और बाह्य संरचना
(ख) अर्थविज्ञानः अर्थ स्वरुप, प्रकार, परिवर्तन

सहायक ग्रंथ

1. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्र नाथ शर्मा
2. भाषा विज्ञान -— भोलानाथ तिवारी
3. भाषा शास्त्र की रुपरेखा - उदय नारायण तिवारी
4. भाषा (हिन्दी अनुवाद) - लैनर्ड ब्लूम फील्ड
5. अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञानः सिद्धान्त और प्रयोग - डॉ० रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव
6. भाषा शिल्प - डॉ० कुसुम अग्रवाल
7. भाषा विज्ञान और भाषा शास्त्र - डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

सत्र - २ एम०ए० पूर्वार्द्ध हिन्दी विभाग सतत् मूल्यांकन - २५

प्रश्नपत्र -—पंचम हिन्दी भाषा मुख्य परीक्षा - १००

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में से कुल पाँच प्रश्न आन्तरिक विकल्प के साथ (२०-२० अंकों के) पूछे जाएगें । अन्तिम प्रश्न में १०-१० अंकों की दो टिप्पणियाँ पूछी जाएंगी ।

भाग - १ (ग) हिन्दी का भौगोलिक विस्तार ओर उसकी बोलियाँ
(गग) मध्यकाल में अवधी और ब्रजभाषा का साहित्यिक भाषा के रुप में विकास
(गगग) उन्नीसवीं सदी के अंतर्गत खड़ी बोली का साहित्यिक भाषा के रुप में विकास
(गन) स्वाधीनता संघर्ष के दौरान हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रुप में विकास

भाग - २ (ग) भाषा और लिपि का परस्पर संबंध-लिपि-विज्ञान का उद्भव और विकास
(गग) देवनागरी लिपिः उद्भव, विकास और विशेषताएं

भाग - ३ (ग) हिन्दी भाषा का मानकीकरण
(गग) मानक हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताएं
(गगग) संप्रेषण सिद्धान्त और भाषा की संप्रेषणीयता

सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी भाषा - डॉ० भोलानाथ तिवारी
2. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास - डॉ० उदय नारायण तिवारी
3. हिन्दी भाषा का विकास - डॉ० धीरेन्द्र वर्मा
4. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि - डॉ० भोलानाथ तिवारी
5. हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास - डॉ० भोलानाथ तिवारी
6. शुद्ध हिन्दी - हरदेव बाहरी
7. देवनागरी लिपि - आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा

एम०ए० (हिन्दी) पाठ्यक्रम
उत्तरार्द्ध, २००५

सत्र - १ अंक - १००

१२५
१२५

सतत् मूल्यांकन के २५ अंकों का विभाजन
कक्षा परीक्षा अथवा आलेख लेखन - १५
प्रत्येक सत्र के पीरिओडिकल टेस्ट - १०

प्रश्नपत्र - १. हिन्दी नाटक
प्रश्नपत्र - २. छायावादोत्तर कविता
प्रश्नपत्र - ३. पाश्चात्य साहित्यालोचन
प्रश्नपत्र - ४. हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल)
प्रश्नपत्र - ५. हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

सत्र : २

प्रश्नपत्र ३,४ वैकल्पिक हैं। विशिष्ट अध्ययन के लिए वर्ग क अथवा ख में से एक का चुनाव किया जा सकता है।

प्रश्नपत्र - १. प्रयोजनमूलक हिन्दी
प्रश्नपत्र - २. कार्यालयी, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में हिन्दी

		वर्ग - क	वर्ग - ख
प्रश्नपत्र - ३.	विशिष्ट अध्ययन	हिन्दी उपन्यास - ६	अनुवाद सिद्धांत - ६
प्रश्नपत्र - ४.	विशिष्ट अध्ययन	हिन्दी उपन्यास - ७	अनुवाद सिद्धांत - ७

प्रश्नपत्र - ५. सेमिनार आलेख

सत्र - १ एम०ए० उत्तरार्द्ध सतत् मूल्यांकन - २५
प्रश्नपत्र - प्रथम **हिन्दी नाटक** मुख्य परीक्षा - १००

निर्देश : खण्ड १, २, ३ की सभी पाठ्य पुस्तकों से एक -एक प्रश्न तथा एक-एक व्याख्या आंतरिक विकल्प के साथ पूछी जाएगी। परीक्षार्थी को कोई चार व्याख्याएँ तथा चार प्रश्न करने होंगे।

भाग- १ (क) अंधेर नगरी - भारतेंदु
(ख) चंद्रगुप्त - जयशंकर प्रसाद

भाग- २ अंधायुग - धर्मवीर भारती

भाग- ३ आधे अधूरे - मोहन राकेश

सहायक ग्रंथ

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र - रामविलास शर्मा
2. जयशंकर प्रसाद - नन्द दुलारे वाजपेयी
3. प्रसाद के नाटक: स्वरुप और संरचना - गोविन्द चातक

4. हिन्दी के आधुनिक नाटक - डॉ० नगेन्द्र
5. हिन्दी नाटक: उद्‌भव और विकास - डॉ० दशरथ ओझा
6. आधुनिक नाटक का मसीहा: मोहन राकेश - गोविन्द चातक
7. अंधायुग: पाठ और प्रदर्शन - जयदेव तनेजा
8. आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ० उर्मिला मिश्र
9. मोहन राकेश की रंगदृष्टि - जगदीश शर्मा
10. काव्य भाषा और नाट्य भाषा - डॉ० एस० नारायण अय्यर

सत्र - १ **एम०ए० उत्तरार्द्ध** सतत् मूल्यांकन - २५
प्रश्नपत्र - द्वितीय **छायावादोत्तर कविता** मुख्य परीक्षा - १००

निर्देश : खण्ड १, (क ख) २, ३ की सभी पाठ्य पुस्तकों से एक -एक प्रश्न तथा एक-एक व्याख्या आंतरिक विकल्प के साथ पूछी जाएगी। परीक्षार्थी को कोई चार व्याख्याएँ तथा चार प्रश्न करने होंगे।

भाग- १ - (क) कुरुक्षेत्र - रामधारी सिंह दिनकर व्याख्या के लिए सर्ग २, ४
(ख) सर्जना के क्षण - अज्ञेय
(पहला दौंगरा, कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, नदी के द्वीप, आज तुम शब्द न दो, उधार)
भाग- २ - चाँद का मुंह टेढ़ा है - मुक्तिबोध (अंधेरे में)
भाग- ३ - आत्महत्या के विरुद्ध: रघुवीर सहाय
(नेता क्षमा करें, अपने-आप और बेकार, नयी हँसी, अकाल, मेरा प्रतिनिधि, आत्महत्या के विरुद्ध)

सहायक ग्रंथ

1. युग चारण दिनकर - सावित्री सिन्हा
2. अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या - रामस्वरुप चतुर्वेदी
3. अज्ञेय - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
4. कविता के नए प्रतिमान - डॉ० नामवर सिंह
5. नई कविता - जगदीश गुप्त
6. नई कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबंध - गजानन माधव मुक्तिबोध
7. नई कविता: सीमाएं और संभावनाएं - गिरिजा कुमार माथुर
8. नई कविता और अस्तित्ववाद - राम विलास शर्मा
9. तार सप्तक से गद्य कविता - रामस्वरुप चतुर्वेदी
10. प्रगतिवाद - डॉ० शिव कुमार मिश्र
11. मुक्तिबोध -—नंदकिशोर नवल
संवेदना और शिल्प -—नंदकिशोर नवल
12. अंत:स्तल का पूरा विप्लव - अंधेरे में : सं० डॉ० निर्मला जैन

सत्र - १ **एम०ए० उत्तरार्द्ध** सतत् मूल्यांकन - २५
प्रश्नपत्र - तृतीय - **पाश्चात्य साहित्यालोचन** मुख्य परीक्षा - १००

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में से कुल पाँच प्रश्न आन्तरिक विकल्प के साथ (२०-२० अंकों के) पूछे जाएगें । अन्तिम प्रश्न में १०-१० अंकों की दो टिप्पणियाँ पूछी जाएंगी ।

भाग - १ (ग) अरस्तू - अनुकृति, विरेचन तथा त्रासदी सिद्धांत
(गग) लोंजाइनस - उदात्त की अवधारणा
(गग) क्रोचे - अभिव्यंजनावाद

भाग - २ (ग) वड्र्सवर्थ - कविता की परिभाषा
(गग) मैथ्यू आर्नल्ड - आलोचना का स्वरुप
(गग) रिचर्ड्स - काव्य मूल्य संप्रेषण
(गन) इलियट - निर्वैयक्तिकता

भाग - ३ आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ: (ग)नई समीक्षा (गग) संरचनावाद (गग) विखंडनवाद (गन)उत्तर आधुनिकता

सहायक ग्रंथ

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा - संपा. नगेन्द्र, सावित्री सिन्हा
2. पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र: सिद्धान्त और परिदृश्य - डॉ० नगेन्द्र
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास - तारकनाथ बाली
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त - शांतिस्वरुप गुप्त
5. प्लेटो के काव्य सिद्धान्त - निर्मला जैन
6. अरस्तू का काव्य शास्त्र - संपा० नगेन्द्र
7. काव्य के उदात्त तत्व (भूमिका) - नगेन्द्र
8. पाश्चात्य साहित्य चिंतन - निर्मला जैन
9. साहित्य सिद्धान्त (अनूदित) - रेने वेलेक, आस्टिन वारेन
10. पश्चिमी आलोचना का हिन्दी — आलोचना पर प्रभाव - डॉ० एस० नारायण अय्यर

सत्र - १ **एम०ए० उत्तरार्द्ध** सतत् मूल्यांकन - २५
प्रश्नपत्र - चतुर्थ **हिन्दी साहित्य का इतिहास** मुख्य परीक्षा - १००
(आदिकाल से रीतिकाल तक) कुल - १२५

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में से कुल पाँच प्रश्न आन्तरिक (विकल्प सहित) २०-२० अंकों के पूछे जाएगें । अन्तिम प्रश्न में १०-१० अंकों की दो टिप्पणियाँ पूछी जाएंगी ।

भाग - १ (क) साहित्येतिहास लेखन की समस्याएं - दृष्टियां और विधियाँ
(ख) हिन्दी साहित्य के प्रमुख इतिहास ग्रंथ और उनका मूल्यांकन
(ग) हिन्दी साहित्येतिहास का काल विभाजन

भाग - २ (क) आदिकाल के नामकरण की समस्याएं
(ख) आदिकालीन साहित्य की सांस्कृतिक, राजनीतिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि, काल-सीमा
(ग) आदिकालीन कविता और गद्य साहित्य की प्रवृत्तियों और विशेषताओं का विकासात्मक अध्ययन और मूल्यांकन

भाग - ३ (क) भक्तिकाल की पृष्ठभूमि, भक्ति आंदोलन
(ख) भक्तिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियां - विभिन्न काव्यधाराएं - गद्य साहित्य का वैशिष्ट्य एवं मूल्यांकन
(ग) रीतिकाल की पृष्ठभूमि, काल-सीमा, नामकरण

(घ) रीतिकाल की प्रवृत्तियाँ, गद्य साहित्य - वैशिष्ट्य और मूल्यांकन

सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का आदिकाल - हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - रामकुमार वर्मा
4. हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास (खंड १ से १७) - नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास - संपा० नगेन्द्र
6. हिन्दी साहित्य का उत्तर मध्यकाल: रीतिकाल - डॉ० महेन्द्र कुमार
7. साहित्य और इतिहास - दृष्टि - मैनेजर पाण्डेय
8. रीति काव्य की भूमिका - नगेन्द्र
9. हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय - पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल
10. हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास - हजारी प्रसाद द्विवेदी

सत्र - १ **एम०ए० उत्तरार्द्ध** सतत् मूल्यांकन - २५

प्रश्नपत्र - पंचम **हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)** मुख्य परीक्षा - १००

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में से कुल पाँच प्रश्न (विकल्प सहित) २०-२० अंकों के पूछे जाएगें । अन्तिम प्रश्न में १०-१० अंकों की दो टिप्पणियाँ पूछी जाएंगी ।

भाग - १ (र) आधुनिक साहित्य की काल सीमा - आधुनिकता एवं समकालीनता की अवधारणा
(ग) आधुनिक साहित्य का प्रवर्तन: राजनीतिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि, काल सीमा
(ग्ग) हिन्दी गद्य का विकास - ईसाई मिशनरियां, फोर्ट विलियम कॉलेज तथा आर्य समाज की भूमिका

भाग - २ आधुनिक काव्य के विविध सोपान - प्रवृत्तियां विकासक्रम और विशेषताएं

भाग - ३ (र) गद्य की विविध सर्जनात्मक विधाओं - कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, गद्यकाव्य, रेखाचित्र, संस्मरण,
आत्मकथा, यात्रावृत्त, पत्र, भेंट वार्ता, लघुकथा, रिपोर्ताज का विकास, प्रवृत्तियां एवं विशेषताएं
(ग) हिन्दी आलोचना का विकास, प्रवृत्तियां और विशेषताएं -
(ग्ग) आधुनिक साहित्य के विकास में पत्र - पत्रिकाओं का योगदान ।

सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास - संपा० नगेन्द्र
3. हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी - आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
4. हिन्दी का गद्य साहित्य - डॉ० रामचन्द्र तिवारी
5. आधुनिकता और इतिहास बोध - डॉ० नित्यानन्द तिवारी
6. भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा - राम विलास शर्मा
7. आधुनिक साहितय की प्रवृत्तियां - नामवर सिंह
8. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह
9. छायावाद - नामवर सिंह

10. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - कृष्णशंकर शुक्ल
11. हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास - सुमनराजे

सत्र - २ **एम०ए० उत्तरार्द्ध** **सतत् मूल्यांकन - २५**
प्रश्नपत्र - प्रथम **प्रयोजनमूलक हिन्दी** **मुख्य परीक्षा - १००**

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में से कुल पाँच प्रश्न (विकल्प सहित) २०-२० अंकों के पूछे जाएगें। अन्तिम प्रश्न में १०-१० अंकों की दो टिप्पणियाँ पूछी जाएंगी।

भाग - १ **(क) हिन्दी की भाषिक संरचना और उसका मानक रुप भाषा की संकल्पना**
(ग) मौखिक भाषा, लिखित भाषा, (गग) सामान्य भाषा, असामान्य भाषा (गगग) औपचारिक भाषा, अनौपचारिक भाषा
(ख) भाषा के विविध रुप
(i) सामान्य हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी (ग) राष्ट्रभाषा हिन्दी
(गग) राजभाषा हिन्दी (गग) संपर्क भाषा हिन्दी (ग) राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी में अंतर

भाग - २ **(क) राजभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति**
(ख) भाषा के मानकीकरण एवं आधुनिकीकरण की संकल्पना
(ग) पद संरचना के स्तर पर मानकीकरण
(गग) वाक्य संरचना के स्तर पर मानकीकरण
(गगग) लिपि के स्तर पर मानकीकरण
(गग) वर्तनी के स्तर पर मानकीकरण

भाग - ३ **प्रयोजनमूलक हिन्दी की संकल्पना और उसके विविध आयाम**

(ग) कार्यालयी हिन्दी (गग) जनसंचार की हिन्दी (गगग) वित्त एवं वाणिज्य की हिन्दी
(गग) विज्ञान, तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र की हिन्दी (ग) कम्प्यूटर क्षेत्रों में हिन्दी

सहायक ग्रंथ

1. प्रयोजन मूलक हिन्दी: संरचना एवं अनुप्रयोग - डॉ० रामप्रकाश तथा डॉ० दिनेश गुप्त
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी: सिद्धान्त और प्रयोग - दंगल झाल्टे
3. राजभाषा हिन्दी - कैलाश चन्द्र भाटिया
4. प्रशासनिक हिन्दी: ऐतिहासिक संदर्भ - महेश चन्द्र गुप्त
5. प्रयोजनमूलक कामकाजी हिन्दी - कैलाश चन्द्र भाटिया
6. प्रशासन में राजभाषा हिन्दी - कैलाश चन्द्र भाटिया
7. प्रशासनिक हिन्दी: टिप्पणी प्रारुपण - हरिमोहन
8. कामकाजी हिन्दी - कैलाशचन्द्र भाटिया
9. राजभाषा के विकास में अनुवाद की भूमिका - डॉ० गार्गी गुप्ता, डॉ० पूरन चन्द्र टण्डन
10. व्यावहारिक हिन्दी और रचना - कृष्ण कुमार गोस्वामी

सत्र - २ **एम०ए० उत्तरार्द्ध** **सतत् मूल्यांकन - २५**

प्रश्नपत्र -द्वितीय - कार्यालयी, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में हिन्दी मुख्य परीक्षा - १००

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में से कुल पाँच प्रश्न (विकल्प सहित) २०-२० अंकों के पूछे जाएगें। अन्तिम प्रश्न में १०-१० अंकों की दो टिप्पणियाँ पूछी जाएंगी।

भाग — १ प्रशासन व्यवस्था और भाषा

कार्यालयी हिन्दी की प्रकृति
कार्यालयी कार्य पद्धति के विविध आयाम
(ग) पत्र लेखन और उसके प्रकार (गग) प्रारुप लेखन (गग) टिप्पण
(गन) प्रतिवेदन (ग) संक्षेपण

प्रशासनिक हिन्दी की शब्दावली और अभिव्यक्तियाँ

(ग) शब्द और पारिभाषिक शब्द में अंतर
(ग) पारिभाषिक शब्द संकल्पना एवं संरचना
(गग) विशिष्ट पारिभाषिक अभिव्यक्तियाँ -संदर्भ - रघुनंदन प्रसाद की पुस्तक पारिभाषिक शब्दावली

वित्त एवं वाणिज्य क्षेत्र में हिन्दी एवं अनुप्रयोग

(क) बैंकिंग की अवधारणा (ख) बैंकिंग क्षेत्र में हिन्दी की आवश्यकता एवं अनुप्रयोग (पारिभाषिक शब्दावली और बीमा क्षेत्रों में हिन्दी की आवश्यकता और अनुप्रयोग (ग) बाजार की अवधारणा में हिन्दी की आवश्यकता एवं अनुप्रयोग (घ) बीमा क्षेत्रों में हिन्दी की आवश्यकता एवं अनुप्रयोग (ड.) व्यावसायिक पत्र लेखन

सहायक ग्रंथ

1. **प्रयोजन मूलक हिन्दी: संरचना एवं अनुप्रयोग - डॉ० रामप्रकाश तथा डॉ० दिनेश गुप्त**
2. **राजभाषा हिन्दी - कैलाश चन्द्र भाटिया**
3. **हिन्दी भाषा की सामाजिक भूमिका - भोलानाथ तिवारी**
4. **हिन्दी भाषा: संदर्भ और संरचना - डॉ० सूरजभान सिंह**
5. **भाषा - शिल्प - कुसुम अग्रवाल**
6. **कामकाजी हिन्दी - कैलाशचन्द्र भाटिया**
7. **प्रशासन में राजभाषा हिन्दी - कैलाश चन्द्र भाटिया**
8. **व्यावहारिक हिन्दी और रचना - कृष्ण कुमार गोस्वामी**
9. **भाषायी अस्मिता और हिन्दी - रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव**
10. **हिन्दी प्रयोग और प्रयोग - बी०आर० जगन्नाथन**

सत्र - २ **एम०ए० उत्तरार्द्ध** **सतत् मूल्यांकन - २५**

वर्ग - ख - विशेष अध्ययन **मुख्य परीक्षा - १००**

प्रश्नपत्र - तृतीय अनुवाद सिद्धान्त - ६ (विशेष अध्ययन)

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में से कुल पाँच प्रश्न (विकल्प सहित) २०-२० अंकों के पूछे जाएगें। अन्तिम प्रश्न में १०-१० अंकों की दो टिप्पणियाँ पूछी जाएंगी।

भाग - १

(ग) अनुवादः परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएं
(गग) अनुवाद की इकाईः शब्द, पदबंध, वाक्य, पाठ
(गगग) अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि

भाग - २ (क) अनुवाद के प्रकार
(ख) समतुल्यता का सिद्धान्त

भाग - ३ अनुवाद के उपकरण (कोश) और उनकी उपयोग विधि
(क) पारिभाषिक शब्दावली
(ख) पुनरीक्षण

सहायक ग्रंथ सूची

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ० नगेन्द्र
2. अनुवाद कलाः सिद्धान्त और प्रयोग, कैलाशचंद्र भाटिया
3. अनुवाद का विज्ञान - डॉ० गार्गी गुप्त
4. अनुवाद विज्ञानः सिद्धान्त एवं सिद्धि - अवधेश मोहन गुप्त
5. अनुवाद बोध - डॉ० गार्गी गुप्त, डॉ० पूरनचंद टंडन
6. अनुवाद कला - डॉ० एन.ई. विश्वनाथ अय्यर
7. अनुवाद सिद्धान्त और प्रयोग - डॉ० जी० गोपीनाथन
8. अनुवाद चिंतनः अनुवाद विज्ञान का सांगोपांग विवेचन, विद्या प्रकाशन मंदिर
9. आशु अनुवाद - डॉ० गरिमा श्रीवास्तव (संजय प्रकाशन, दिल्ली)

एम०ए० उत्तरार्द्ध

अनुवाद सिद्धांत छ

सत्र - २ वर्ग ख (विशेष अध्ययन) सतत् मूल्यांकन - २५

प्रश्नपत्र - ४ मुख्य परीक्षा - १००

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में से कुल पाँच प्रश्न (विकल्प सहित) २०-२० अंकों के पूछे जाएगें। अन्तिम प्रश्न में १०-१० अंकों की दो टिप्पणियाँ पूछी जाएंगी।

भाग -१ (क) पाठ (ऱ्ोॅ) की अवधारणा और प्रकृति
(ख) अनुवाद सामग्री के प्रकार
(ग) कार्यालयी (गग)वैज्ञानिक तथा तकनीकी
(गगग) साहित्यिक (गन)मानविकी (न)संचार माध्यमों से संबद्ध

भाग -२ (ग) कार्यालयी सामग्री के अनुवाद की समस्याएँ
(गग) वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ
(गगग) सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ
(गन) मानविकी विषयों के अनुवाद की समस्याएँ

भाग -३ विविध संचार माध्यमों से संबद्ध सामग्री के अनुवाद की समस्याएँ –

(ग) मुद्रण माध्यम

(गग) दृश्य - श्रव्य माध्यम

(गगग) इलेक्ट्रोनिक माध्यम

(न) विज्ञापन

(ञ) फिल्म के भाषिक अंश

सहायक ग्रंथ सूची

1. अनुवाद विज्ञान - डॉ० नगेन्द्र
2. अनुवाद कला : सिद्धान्त और प्रयोग - कैलाशचंद्र भाटिया
3. अनुवाद साधना - डॉ. पूरनचन्द टण्डन
4. राजभाषा के विकास में अनुवाद की भूमिका, डॉ. गार्गी गुप्त, डॉ. पूरनचन्द टण्डन
5. काव्यानुवाद : सिद्धान्त और समस्याएँ - डॉ० नवीनचंद्र सहगल
6. अनुवाद की समस्याएँ - डॉ० दंगल झाल्टे
7. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ० बालेंदुशेखर तिवारी
8. अनुवाद कला - डॉ० एन०ई० विश्वनाथ अय्यर

सत्र - २ **एम०ए० उत्तरार्द्ध**

प्रश्नपत्र - तृतीय **विशिष्ट अध्ययन वर्ग 'क'** **सतत् मूल्यांकन २५**

समय - ३ घण्टे **हिन्दी उपन्यास - ६** **मुख्य परीक्षा - १००**

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में से कुल पाँच प्रश्न (विकल्प सहित) २०-२० अंकों के पूछे जाएगें । अन्तिम प्रश्न में १०-१० अंकों की दो टिप्पणियाँ पूछी जाएंगी ।

भाग -१ उपन्यास विधा का वैशिष्ट्य

हिन्दी उपन्यास: (क) भारतीय समाज का मध्यवर्ग

(ख) आधुनिकता की प्रक्रिया

(ग) यथार्थवाद

भाग - २ अन्तर्वस्तु / संवेदना का स्वरुप

(क) कथा, चरित्र और परिवेशजन्य विचार और संवेदना

(ख) कथात्मक समन्विति में भाव और विचार की भूमिका

(ग) शिल्प विधान: भारतेन्दु काल से प्रेमचंद तक (कथा संरचना, चरित्र-संरचना, भाषिक संरचना)

भाग - ३ शिल्प विधान प्रेमचन्द से स्वतन्त्रता प्राप्ति तक (कथा संरचना, चरित्र-संरचना, भाषिक संरचना)

शिल्प विधान - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद नवें दशक तक (कथा संरचना, चरित्र-संरचना, भाषिक संरचना)

सहायक ग्रंथ

1. हिन्दी उपन्यास: एक सर्वेक्षण - महेन्द्र चतुर्वेदी
2. हिन्दी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा - रामदरश मिश्र
3. हिन्दी उपन्यास की प्रवृत्तियां - शशि भूषण सिंहल
4. हिन्दी उपन्यास: १९५० के बाद - नित्यानंद तिवारी
5. हिन्दी उपन्यास: सामाजिक चेतना - कुँवर पाल सिंह

6. हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद - त्रिभुवन सिंह
7. उपन्यास और लोक जीवन - रॉल्फ फाक्स (अनूदित)
8. उपन्यास: स्थिति और गति - चन्द्रकांत बांदिवडेकर
9. हिन्दी उपन्यास - शिव नारायण श्रीवास्तव
10. हिन्दी उपन्यासों में बौद्धिक विमर्श - डॉ० गरिमा श्रीवास्तव
11. उपन्यास: पहचान और परख - डॉ० इन्द्रनाथ मदान
12. आधुनिकता और इतिहास बोध - नित्यानन्द तिवारी
13. उपन्यास का उदय - आयन वाट (अनूदित)
14. हिन्दी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा - डॉ० रामदरश मिश्र
15. उपन्यास का सिद्धान्त - जार्ज लुकाच
16. हिन्दी उपन्यास कोश (दो खंडों में) - डॉ० गोपाल राय

सत्र - २ **एम०ए० उत्तरार्द्ध** **कुल - १२५**

प्रश्नप - चतुर्थ **विशिष्ट अध्ययन वर्ग 'क'** सतत् मूल्यांकन : २५

समय - ३ घण्टे **हिन्दी उपन्यास - ६** मुख्य परीक्षा - १००

निर्देश : इस प्रश्न पत्र में खण्ड १ (क, ख), २, ३ से प्रत्येक पाठ्य पुस्तक से एक -एक व्याख्या तथा एक-एक प्रश्न आंतरिक विकल्प के साथ पूछे जाऐंगे । परीक्षार्थी को कोई चार व्याख्याएँ तथा चार प्रश्न करने होंगे ।

भाग- १ (क) परीक्षा गुरु - लाला श्रीनिवास दास
(ख) दिव्या - यशपाल
भाग- २ मानस का हंस - अमृतलाल नागर
भाग- ३ राग दरबारी - श्रीलाल शुक्ल

<u>सहायक ग्रंथ</u>

1. हिन्दी उपन्यास - शिव नारायण श्रीवास्तव
2. हिन्दी उपन्यास: सामाजिक चेतना - कुँवर पाल सिंह
3. हिन्दी उपन्यास: एक अन्तर्यात्रा - रामदरश मिश्र
4. हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद - कमला गुप्ता
5. हिन्दी उपन्यास: १९५० के बाद - नित्यानंद तिवारी
6. समकालीन उपन्यास: संवेदना और सरोकार - मधुरेश
7. यशपाल के उपन्यास - चमनलाल
8. दिव्या का महत्व - मधुरेश
9. हिन्दी उपन्यास: पहचान और परख - इन्द्रनाथ मदान
10. गोदान और रागदरबारी का तुलनात्मक अध्ययन - मीनाक्षी श्रीवास्तव

एम०ए० उत्तरार्द्ध

सत्र - २ सतत् मूल्यांकन - २५

प्रश्नपत्र - ५ मुख्य परीक्षा - १००

प्रोजेक्ट कार्य

नोट - प्रत्येक विद्यार्थी किसी एक विषय का चयन अध्यापकों के साथ मिल कर प्रोजेक्ट कार्य के लिए करेगा। विषय पर ४०-५० पृष्ठों का आलेख टंकित रुप में मुख्य परीक्षा के तीन सप्ताह पहले जमा किया जाएगा।

अंक विभाजन :

सतत् मूल्यांकन के (२५ अंक) अंक आंतरिक परीक्षक द्वारा जो निर्देशक स्वयं होगा, दिए जाएंगे। प्रोजेक्टकार्य के ५० अंक बाह्य परीक्षक तथा शेष २५ साक्षात्कार के लिए होंगे। साक्षात्कार में तीन परीक्षकों का दल लेगा।

एम०ए० पूर्वाद्ध हिन्दी

क्रम सं०	प्रश्न पत्र	कालांश प्रति सप्ताह	परीक्षावधि	समसत्रात्मक मूल्यांकन	सतत् मूल्यांकन	कुल	न्यनतम उत्तीर्णांक
१.	आदिकालीन काव्य	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	३६३
२.	भक्तिकालीन काव्य	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	३६३
३.	रीतिकालीन काव्य	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	३६३
४.	आधुनिक कविता (छायावाद)	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	३६३
५.	कथा साहित्य	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	३६३
			कुल योग	२५०	१२५	३७५	

क्रम सं०	प्रश्न पत्र	कालांश प्रति सप्ताह	परीक्षावधि	समसत्रात्मक मूल्यांकन	सतत् मूल्यांकन	पूर्णांक	न्यनतम उत्तीर्णांक
१.	कम्प्यूटर शिक्षण	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	३६३
२.	निबन्ध साहित्य और अन्य गद्य विद्याएँ	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	३६३
३.	भारतीय काव्यशास्त्र	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	३६३
४.	भाषा विज्ञान	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	३६३
५.	हिन्दी भाषा	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	३६३
			कुल योग	२५०	१२५	३७५	

एम०ए० उत्तरार्ध - हिन्दी

क्रम सं०	प्रश्न पत्र	कालांश प्रति सप्ताह	परीक्षावधि	समसत्रात्मक मूल्यांकन	सतत् मूल्यांकन	पूर्णांक	न्यनतम उत्तीर्णांक
१.	हिन्दी नाटक	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	
२.	छायावादोत्तर कविता	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	
३.	पाश्चात्य साहित्यालोचन	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	
४.	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकालीन से रीतिकाल)	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	
५.	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	
			कुल योग	२५०	१२५	३७५	

क्रम सं०	प्रश्न पत्र का नामकरण	कालांश प्रति सप्ताह	परीक्षावधि	समसत्रात्मक मूल्यांकन	सतत् मूल्यांकन	पूर्णांक	न्यनतम उत्तीर्णांक
१.	प्रयोजनमूलक हिन्दी	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	
२.	कार्यालयी तकनीकी एवं प्रोद्योगिक क्षेत्रों में हिन्दी	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	
३.	विशिष्ट (क अध्ययन अथवा ख)	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	
४.	विशिष्ट अध्ययन (वर्ग क अथवा वर्ग ख में से एक)	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	
५.	शोध प्रपत्र	५	३ घण्टे	५०	२५	७५	
			कुल योग	२५०	१२५	३७५	

-संदर्भ - रघुनंदन प्रसाद की पुस्तक पारिभाषिक शब्दावली

11. **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि – डॉ० आद्या वाजपेयी**

-संदर्भ - रघुनंदन प्रसाद की पुस्तक पारिभाषिक शब्दावली

११. **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि – डॉ० आद्या वाजपेयी**

-संदर्भ - रघुनंदन प्रसाद की पुस्तक पारिभाषिक शब्दावली

११. **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि – डॉ० आद्या वाजपेयी**

-संदर्भ - रघुनंदन प्रसाद की पुस्तक पारिभाषिक शब्दावली

११. **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि – डॉ० आद्या वाजपेयी**

-संदर्भ - रघुनंदन प्रसाद की पुस्तक पारिभाषिक शब्दावली

११. **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि – डॉ० आद्या वाजपेयी**

-संदर्भ - रघुनंदन प्रसाद की पुस्तक पारिभाषिक शब्दावली

११. **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि – डॉ० आद्या वाजपेयी**

-संदर्भ - रघुनंदन प्रसाद की पुस्तक पारिभाषिक शब्दावली

११. **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि – डॉ० आद्या वाजपेयी**

-संदर्भ - रघुनंदन प्रसाद की पुस्तक पारिभाषिक शब्दावली

११. **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि – डॉ० आद्या वाजपेयी**

-संदर्भ - रघुनंदन प्रसाद की पुस्तक पारिभाषिक शब्दावली

११. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि — डॉ० आद्या वाजपेयी

-संदर्भ - रघुनंदन प्रसाद की पुस्तक पारिभाषिक शब्दावली

Verified

Offg. Secretary
Banasthali Vidyapith
P.O. Banasthali Vidyapith
Distt. Tonk (Raj.)-304022

हिन्दी विभाग

वनस्थली विद्यापीठ

पाठ्यक्रम समिति की बैठक 29 दिसम्बर, 2018 को वनस्थली विद्यापीठ के सीएमएस सभागार में आयोजित की गई।

पाठ्यक्रम समिति में उपस्थित सदस्य

डॉ. आशीष पाण्डेय	: आंतरिक सदस्य
डॉ बिजय कुमार प्रधान	: आंतरिक सदस्य
डॉ. गीता कपिल	: संयोजक
सुश्री निवेदिता सिंह	: आंतरिक सदस्य
डॉ. पिंकी पारीक	: आंतरिक सदस्य
डॉ. स्वर्णा	: आंतरिक सदस्य
प्रो. अब्दुल अलीम	: बाह्य विशेषज्ञ

प्रो0 विद्योत्तमा मिश्रा, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (बाह्य विशेषज्ञ) और **डॉ. स्वाति सोनल** (आंतरिक सदस्य) अपरिहार्य कारणों से बैठक में अनुपस्थित रहीं।

कार्यसूची 1. बैठक की कार्यवाही आरंभ करते हुए सर्वप्रथम संयोजिका ने दिनांक 27 अप्रैल 2016 को हुई पाठ्यक्रम समिति की बैठक की कार्यवाही को संपुष्ट किया।

कार्यसूची 2. तदुपरान्त परीक्षकों के नामों पर विचार कर परीक्षकों की सूची को नवीकृत करके गोपनीय अनुभाग को भेजा गया।

कार्यसूची 3. पाठ्यक्रम समिति द्वारा स्नातक एवं स्नातकोत्तर कार्यक्रम के पाठ्यक्रमों पर विचार किया गया और वर्तमान पाठ्यक्रम में निम्नलिखित आवश्यक संशोधन किये गये –

स्नातक कार्यक्रम हेतु

1.	**प्रथम समसत्र दिसम्बर 2019**	**आंशिक परिवर्तन [1]**
2.	**द्वितीय समसत्र अप्रैल/मई 2020**	**आंशिक परिवर्तन [2]**

3.	**तृतीय समसत्र दिसम्बर 2020**	**आंशिक परिवर्तन [3]**
4.	**चतुर्थ समसत्र अप्रैल/मई 2021**	**आंशिक परिवर्तन [4]**
5.	**पंचम समसत्र दिसम्बर 2021**	**आंशिक परिवर्तन [5] / प्रमुख परिवर्तन (चयनित पाठ्यक्रम प्रस्तावित) [7]**
6.	**षष्ठ समसत्र अप्रैल/मई 2022**	**आंशिक परिवर्तन [6] / प्रमुख परिवर्तन (चयनित पाठ्यक्रम प्रस्तावित) [7]**

1. प्रथम समसत्र के पाठ्यक्रम **हिन्दी व्याकरण एवं काव्यांग** (HIND 103) में आंशिक परिवर्तन एवं इकाईयां व्यवस्थित की गईं। **उपन्यास साहित्य** (HIND 104) की भी इकाईयां पुनर्गठित की गईं।

2. **हिन्दी कहानी** (HIND 101) **तथा हिन्दी काव्य** (HIND 102) के पाठ्यक्रमों में इकाईयां पुनर्गठित की गईं, तथा **हिन्दी काव्य** (HIND 102) पाठ्यक्रम का शीर्षक **मध्ययुगीन काव्य** रखने पर विचार किया गया।

3. तृतीय समसत्र में पाठ्यक्रम **आधुनिक काव्य (भारतेन्दु युग से छायावाद तक)** (HIND 201) पाठ्यक्रम का शीर्षक **आधुनिक काव्य–I** किया गया **तथा हिन्दी नाटक एवं एकांकी** (HIND 203) में आंशिक परिवर्तन किये गये तथा इकाईयां पुनर्गठित करने की अनुशंसा समिति ने की।

4. पाठ्यक्रम **'आधुनिक काव्य (छायावादोत्तर कविता से समकालीन कविता)'** (HIND 202) पाठ्यक्रम का शीर्षक **आधुनिक काव्य–II** किया गया साथ ही पंचम इकाई में सम्मिलित काव्यांदोलनों में स्पष्टता के लिए प्रगतिवादी काव्य को सम्मिलित किये जाने एवं आंशिक परिवर्तनों की अनुशंसा की गई। पाठ्यक्रम समिति की अनुशंसा के आधार पर **आधुनिक काव्य (छायावादोत्तर कविता से समकालीन कविता)** एवं **संस्मरण एवं जीवनी** (HIND 204) पाठ्यक्रमों की इकाईयां पुनर्गठित की गईं।

5. पंचम समसत्र के पाठ्यक्रम **आत्मकथा एवं डायरी साहित्य** (HIND 301) तथा **हिन्दी निबन्ध एवं आलोचना** (HIND 302) की इकाईयां पुनर्गठित की गईं एवं विषयगत स्पष्टता के लिए आंशिक परिवर्तन की अनुशंसा पाठ्यक्रम समिति ने की।

6. पाठ्यक्रम **व्यंग्य एवं रिपोर्ताज साहित्य** (HIND 304) के पाठ्यक्रम में विषयगत स्पष्टता के लिए आंशिक परिवर्तन के साथ ही पाठ्यक्रम की इकाईयों को पुनर्गठित किया गया।

7. पाठ्यक्रम को छात्राओं के लिए विकल्प आधारित बनाने हेतु पंचम एवं षष्ठ समसत्र में चयनित पाठ्यक्रम समूह को सम्मिलित किया गया है। जिसके अंतर्गत **आत्मकथा एवं डायरी साहित्य** , **प्रयोजनमूलक हिन्दी** , **हिन्दी यात्रा साहित्य**, **महिला आत्मकथा लेखन** ,**अनुवाद विज्ञान** और **सर्जनात्मक लेखन के विविध आयाम** नवीन पाठ्यक्रमों को विकल्प समूह के रूप में सम्मिलित किया गया।

- **स्नातक कार्यक्रम के उद्देश्य एवं परिणाम तथा इनके अंतर्गत आने वाले सभी पाठ्यक्रमों के अपेक्षित परिणामों का अवलोकन किया तथा आवश्यक संशोधन की संस्तुति की गयी।**

- **<u>स्नातक कार्यक्रमों के सभी पाठ्यक्रमों की मूल एवं संदर्भ पुस्तकों का अवलोकन करके शीर्षक एवं लेखक के नाम के साथ प्रकाशन संस्थान, प्रकाशन वर्ष और स्थान को आगामी सत्र 2019–20 से ही सम्मिलित किये जाने की संस्तुति पाठ्यक्रम समिति द्वारा की गयी।</u>**

- **पाठ्यक्रम समिति की बैठक में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में ई संदर्भ स्रोत के लिंक का अवलोकन किया गया, और वर्तमान समय के अनुरूप आवश्यक संशोधन की संस्तुति की।**

संलग्नक – 1 : स्नातक कार्यक्रम के शैक्षणिक उद्देश्य, अपेक्षित परिणाम तथा पाठ्यक्रम योजना।

संलग्नक – 2 : संशोधित पाठ्यक्रम, अपेक्षित परिणाम, संशोधित संदर्भ पुस्तक सूची तथा ई संदर्भ स्रोत।

<u>हिन्दी स्नातकोत्तर कार्यक्रम हेतु</u>

1.	**प्रथम समसत्र दिसम्बर, 2019**	**यथावत्**
2.	**द्वितीय समसत्र अप्रैल/मई, 2020**	**आंशिक परिवर्तन [1]**
3.	**तृतीय समसत्र दिसम्बर, 2020**	**आंशिक परिवर्तन [2]/संशोधित [2/] विषयाधारित चयनित पाठ्यक्रम प्रस्तावित [4]/प्रमुख परिवर्तन (स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम प्रस्तावित)[5]**
4.	**चतुर्थ समसत्र अप्रैल/मई, 2021**	**संशोधित [3]/ चयनित पाठ्यक्रम [4]/ प्रमुख परिवर्तन (स्वाध्यायाधारित वैकल्पिक पाठ्यक्रम प्रस्तावित)[5]**

1. द्वितीय समसत्र के **भाषा विज्ञान** (HIND 405) पाठ्यक्रम को विषय केंद्रित और आधुनिक भाषा वैज्ञानिक संदर्भों के तहत विस्तार के लिए आवश्यक परिवर्तन किये गये तथा **हिन्दी भाषा** (HIND 406) पाठ्यक्रम के नाम को संशोधित कर **<u>हिन्दी भाषा एवं लिपि</u>** किया गया।

2. तृतीय समसत्र के पाठ्यक्रम **छायावादोत्तर कविता** (HIND 502) में सम्मिलित कवि नागार्जुन और शमशेर बहादुर सिंह की कतिपय कविताओं को परिवर्तित करने के प्रस्ताव को स्वीकृति दी गई। **हिन्दी साहित्य के इतिहास** (HIND 504) पाठ्यक्रम की जगह **<u>हिन्दी आलोचना</u>** नाम से नवीन पाठ्यक्रम को सम्मिलित किये जाने की संस्तुति समिति ने की।

3. **हिन्दी उपन्यास (स्वतंत्रता पूर्व)**(HIND 506) **एवं हिन्दी उपन्यास (स्वतंत्रता पश्चात्)** (HIND 505) को सम्मिलित कर **<u>'हिन्दी उपन्यास'</u>** शीर्षक से नवीन पाठ्यक्रम बनाने की संस्तुति की गयी और **<u>कथेतर गद्य विधाएँ</u>** के नाम से नवीन पाठ्यक्रम को सम्मिलित किये जाने की अनुशंसा समिति द्वारा की गयी।

4. पाठ्यक्रम समिति की अनुशंसा के अनुसार तृतीय समसत्र के विषयाधारित चयनित पाठ्यक्रम एवं चतुर्थ समसत्र के चयनित पाठ्यक्रम समूह में **प्रवासी साहित्य, भारतीय साहित्य, विशिष्ट**

रचनाकार : प्रेमचन्द, विशिष्ट रचनाकार : सूरदास, विशिष्ट रचनाकार : सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' पाठ्यक्रम सम्मिलित किये गये हैं।

5. स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम समूह के अंतर्गत **चार विभिन्न विधाओं से संबंधित पाठ्यक्रमों अनूदित साहित्य, आत्मकथा, जीवनी और डायरी, साहित्य और भारतीय संस्कृति, साहित्य और सिनेमा को** सम्मिलित किया गया।

- **पाठ्यक्रम समिति ने स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के सभी पाठ्यक्रमों की मूल एवं संदर्भ पुस्तकों का अवलोकन किया तथा इसे व्यवस्थित और स्पष्ट करने के लिए शीर्षक एवं लेखक के नाम के साथ प्रकाशन संस्थान, प्रकाशन वर्ष और स्थान को आगामी सत्र 2019–20 से ही सम्मिलित किये जाने की अनुशंसा की।**

- **समिति ने स्नातकोत्तर कार्यक्रम के उद्देश्य एवं परिणाम, सभी पाठ्यक्रमों के अपेक्षित परिणामों का अवलोकन किया, तथा आवश्यक संशोधन करने की संस्तुति की।**

- **पाठ्यक्रम समिति की बैठक में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में ई संदर्भ स्रोत के लिंक का अवलोकन किया गया, और वर्तमान समय के अनुरूप आवश्यक संशोधन की संस्तुति की।**

संलग्नक – 1 : स्नातकोत्तर कार्यक्रम के शैक्षणिक उद्देश्य, अपेक्षित परिणाम तथा पाठ्यक्रम योजना।

संलग्नक – 2 : संशोधित पाठ्यक्रम, अपेक्षित परिणाम, संशोधित संदर्भ पुस्तक सूची तथा ई संदर्भ स्रोत।

एम. फिल. हिन्दी हेतु

1.	**प्रथम समसत्र दिसम्बर, 2019**	**संलग्नक – 3**
2.	**द्वितीय समसत्र अप्रैल/मई, 2020**	
3.	**तृतीय समसत्र दिसम्बर, 2020**	

कार्यसूची सं0 4. पाठ्यक्रम समिति की बैठक में परीक्षकों की रिपोर्ट का मूल्यांकन किया गया। जिसमें अधिकांश परीक्षकों ने अपनी रिपोर्ट में छात्राओं के स्तर को संतोषजनक बताया।

कार्यसूची सं0 5. पिछले वर्षों के प्रश्नपत्रों का मूल्यांकन किया गया। समिति ने पाया कि प्रश्नपत्रों का स्तर छात्राओं के मानसिक स्तर एवं पाठ्यक्रम के सर्वथा अनुकूल है।

(संलग्नक 3)

कार्यसूची सं0 6. पाठ्यक्रम समिति की बैठक में स्नातक स्तर के अन्य दो पाठ्यक्रमों पर भी विचार

किया गया।

- **आधारभूत पाठ्यक्रम (Foundation Course)के आधुनिक भाषा –हिन्दी (BVF005) पाठ्यक्रम हेतु**

1.	**प्रथम समसत्र दिसम्बर, 2019**	**संशोधित** [1]

1. आधारभूत कार्यक्रम के हिन्दी पाठ्यक्रम का अवलोकन करके पाठ्यक्रम समिति ने आवश्यक संशोधन की अनुशंसा की। समिति की अनुशंसा के अनुसार पाठ्यक्रम के शीर्षक आधुनिक भाषा – हिन्दी को परिवर्तित कर सामान्य हिन्दी किया गया।

(संलग्नक 4)

- **स्नातक कार्यक्रम के पत्रकारिता एवं जनसंचार Language Skills (Hindi) (TSKL103) पाठ्यक्रम हेतु**

1.	**प्रथम समसत्र दिसम्बर, 2019**	**संशोधित** [1]

1. बी.ए पत्रकारिता एवं जनसंचार के प्रथम समसत्र दिसम्बर, 2019 के लैंग्वेज स्किल (हिन्दी) के पाठ्यक्रम का अवलोकन किया और आवश्यक संशोधन की संस्तुति की गई। समिति की अनुशंसा के अनुसार पाठ्यक्रम के शीर्षक को परिवर्तित कर **भाषा कौशल – हिन्दी** किया गया।

(संलग्नक 5)

धन्यवाद ज्ञापन के साथ पाठ्यक्रम समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

संलग्नक 1

वनस्थली विद्यापीठ

हिन्दी विभाग

बी.ए./ बी.ए.बी.एड कार्यक्रम : शैक्षणिक उद्देश्य

साहित्य किसी राष्ट्र की अनुभूति तो भाषा उस राष्ट्र की अभिव्यक्ति होती है। भाषा और साहित्य न केवल अपने संबंधित राष्ट्र या समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि वैश्विक संदर्भ में उसकी जवाबदेही, जिम्मेदारी भी तय करते हैं। हिन्दी, भारत की राष्ट्रभाषा होने के साथ ही भारत की राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक, संस्कृति की आधारशिला, सभ्यता की सारथि एवं जनचेतना की गवाह रही है।

हिन्दी भाषा ने वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज–अवधी से होते हुए हजारों वर्ष की लंबी यात्रा में अपना आधुनिक मानक स्वरूप प्राप्त किया है। इस संपूर्ण यात्रा के दौरान हिन्दी न केवल भारतीय भूखण्ड की अभिव्यक्ति का माध्यम रही, अपितु इस दौरान संपूर्ण राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिवर्तनों की साक्षी रही है। विभिन्न देशज–विदेशी भाषाओं के शब्दों के अथाह सागर को लेकर उसने अपना आधुनिक स्वरूप निर्मित किया है, जो कि विश्व संदर्भों में भविष्य की वैश्विक भाषा के रूप में बढ़ने में सक्षम हुआ है। साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ ही किसी भी उन्नत सभ्यता–संस्कृति और राष्ट्र का मूलाधार होता है। साहित्य मानव मन की संवेदनाओं को संतुलित और परिवर्धित कर एक उत्कृष्ट मानव सभ्यता का मार्ग प्रशस्त करता है। हिन्दी भाषा के साथ ही इसका विशाल साहित्यिक परिदृश्य भी है, जो कि विभिन्न कालखण्डों में समाज के चित्रण के साथ ही उसके परिष्करण, सामाजिक प्रवृत्तियों के परिमार्जन की भूमिका निभाता रहा है। 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के बाद हिन्दी ने नवीन गद्य शैली को आत्मसात् किया और 1857 के बाद नवजागरण की मुख्य संवाहिका बनी। साहित्य के इस नये रूप ने तत्कालीन परिस्थितियों के चित्रण के साथ ही जनचेतना के साथ–साथ स्वाधीनता का संपूर्ण युद्ध का सारथ्य किया। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में हिन्दी भाषा और साहित्य के इन्हीं उपांगों का अध्ययन कराने के माध्यम से छात्राओं में सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय भावनाओं का निर्माण, साहित्य के अध्ययन में अभिरूचि की वृद्धि और उनकी सृजनात्मक क्षमता का निर्माण करना है। उपरोक्त पाठ्यक्रम के अंतर्गत छात्राओं को हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं, प्रतिनिधि रचनाओं की आलोचनात्मक व्याख्या के साथ ही व्याकरण स्तर पर काव्यांगों एवं आधारभूत व्याकरणिक नियमों का अध्ययन कराया जाता है।

हिन्दी विभाग के बी.ए कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –:

- हिन्दी साहित्य के इतिहास का कालखण्ड अनुसार अध्ययन कराना।
- विभिन्न कालखण्डों में उद्भूत साहित्यिक प्रवृत्तियों, उनके परिप्रेक्ष्य में तत्युगीन राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का अभिज्ञान कराना।
- आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिक काल की विभिन्न गद्य विधाओं एवं काव्य शैलियों का विवेचनात्मक अध्ययन कराना।
- प्रमुख साहित्यिक रचनाओं, कवियों एवं साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं लेखन पद्धति का समीक्षात्मक अध्ययन कराना।
- हिन्दी साहित्य में सृजनात्मक लेखन के प्रति छात्राओं में अभिरूचि जागृत करना।
- नवाचार में प्रयुक्त प्रयोजनमूलक हिन्दी के विभिन्न उपांगों यथा पारिभाषिक शब्दावली, अनुवाद, संगणक आदि में प्रयुक्ति रूपों का अभिज्ञान कराना।
- प्रशासनिक, विधिक, प्रौद्योगिक, खेल, व्यावसायिक, कार्यालयी, वाणिज्यिक हिन्दी के स्वरूप, नवीन भाषिक संरचना, शब्द निर्माण की प्रकिया का विश्लेषणात्मक अध्ययन कराना।

बी.ए./ बी.ए.बी.एड कार्यक्रम : अपेक्षित परिणाम

- **हिन्दी का व्याकरणिक परिचय :** हिन्दी भाषा और साहित्य का अधिगम व्याकरण होता है। बी.ए के पाठ्यक्रम में आधारभूत व्याकरणिक नियमों एवं काव्यांगों के परिचयात्मक अध्ययन से साहित्य के अध्ययन की अभिरूचि और समझ विकसित होती है।
- **साहित्यिक अभिरूचि का विकास :** साहित्य न केवल सामाजिक प्रतिबिम्ब होता है, अपितु यह मानव मन के परिष्करण का हेतु होता है। पाठ्यक्रम में चयनित रचनाओं के माध्यम से छात्राओं की साहित्यिक अभिरूचि विकसित होगी।
- **विधाओं का ज्ञान** : उपरोक्त पाठ्यक्रम के माध्यम से हिन्दी काव्य के साथ ही आधुनिक गद्य की समस्त विधाओं यथा, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना, व्यंग्य, रिपोर्ताज, संस्मरण, जीवनी आदि समस्त विधाओं से परिचय के साथ ही उनके समीक्षात्मक विश्लेषण क्षमता छात्राओं में विकसित होगी।
- **सृजनात्मकता :** विधाओं के अध्ययन–मनन एवं विवेचन के माध्यम से छात्राओं में सृजनात्मक क्षमता विकसित होगी। कथात्मक आधार भूमि, विशिष्ट लेखन शैली, अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों का विकास होगा।
- **प्रशासनिक दक्षता :** पाठ्यक्रम में चयनित प्रयोजनमूलक हिन्दी के अध्ययन से छात्राएँ हिन्दी के नवीन प्रयुक्तिपरक रूप से परिचित होंगी। कार्यालयी, प्रौद्योगिकी, विधिक, तकनीकी आदि क्षेत्रों की अनुदित शब्दावली, पारिभाषिक कशब्दों की निर्माण प्रकिया का अभिज्ञान होगा।
- **मूल्यपरक शिक्षा :** साहित्य के अध्ययन के माध्यम से छात्राओं में नैतिक मूल्यों का विकास होगा। मानवीय गुणों के उत्कृष्ट भावों का संचरण होता है। जो उनके माध्यम से एक स्वस्थ समाज के निर्माण का आधार बनेगा।
- **रोजगारोन्मुखता :** हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के साथ ही आधुनिक समय में शैक्षणिक, प्रशासनिक, जनसंचार माध्यमों के अलावा विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार सृजित कर रही है। इसके साथ ही विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी हिन्दी माध्यम के प्रति रूचि की वृद्धि हुई है। पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्राओं को उपरोक्त क्षेत्रों में रोजगारोन्मुखता का लाभ मिलेगा।

पाठ्यक्रम योजना :

समसत्र : प्रथम

Existing					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND 103	हिन्दी व्याकरण एवं काव्यांग	4	0	0	4
HIND 104	उपन्यास साहित्य	4	0	0	4

Proposed					
Course Code	course name	**L**	**T**	**P**	**C**
HIND 103	हिन्दी व्याकरण एवं काव्यांग	4	0	0	4
HIND 104	उपन्यास साहित्य	4	0	0	4
	Semester wise total	**8**	**0**	**0**	**8**

समसत्र : द्वितीय

Existing					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND 101	हिंदी कहानी	4	0	0	4
HIND 102	हिन्दी काव्य	4	0	0	4

Proposed					
Course Code	course name	**L**	**T**	**P**	**C**
HIND 101	हिन्दी कहानी	4	0	0	4
HIND 102	मध्ययुगीन काव्य	4	0	0	4
	Semester wise total	**8**	**0**	**0**	**8**

समसत्र : तृतीय

Existing					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND 201	आधुनिक काव्य (भारतेंदु युग से छायावाद तक)	4	0	0	4
HIND 203	हिन्दी नाटक एवं एकांकी	4	0	0	4

Proposed					
Course Code	course name	**L**	**T**	**P**	**C**
HIND	आधुनिक काव्य–I	4	0	0	4
HIND 203	हिन्दी नाटक एवं एकांकी	4	0	0	4
	Semester wise total	**8**	**0**	**0**	**8**

समसत्र : चतुर्थ

Existing					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND 202	आधुनिक काव्य (छायावादोत्तर कविता से समकालीन कविता)	4	0	0	4
HIND 204	संस्मरण एवं जीवनी	4	0	0	4

Proposed					
Course Code	course name	**L**	**T**	**P**	**C**
HIND	आधुनिक काव्य–II	4	0	0	4
HIND 204	संस्मरण एवं जीवनी	4	0	0	4
	Semester wise total	**8**	**0**	**0**	**8**

समसत्र : पंचम

Existing					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND 301	आत्मकथा एवं डायरी साहित्य	4	0	0	4
HIND 302	हिन्दी निबन्ध एवं आलोचना	4	0	0	4

Proposed					
Course Code	course name	**L**	**T**	**P**	**C**
HIND 302	हिन्दी निबन्ध एवं आलोचना	4	0	0	4
HIND	चयनित अध्ययन– I	4	0	0	4
	Semester wise total	**8**	**0**	**0**	**8**

समसत्र : षष्ठ

Existing					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND 303	प्रयोजनमूलक हिन्दी	4	0	0	4
HIND 304	व्यंग्य एवं रिपोर्ताज साहित्य	4	0	0	4

Proposed					
Course Code	course name	**L**	**T**	**P**	**C**
HIND 304	व्यंग्य एवं रिपोर्ताज साहित्य	4	0	0	4
HIND	चयनित अध्ययन -II	4	0	0	4
	Semester wise total	**8**	**0**	**0**	**8**

चयनित पाठ्यक्रम समूह					
HIND 301	**आत्मकथा एवं डायरी साहित्य**	4	0	0	4
HIND ----	**हिन्दी यात्रा साहित्य**	4	0	0	4
HIND ----	**महिला आत्मकथा लेखन**	4	0	0	4
HIND 303	**प्रयोजनमूलक हिन्दी**	4	0	0	4
HIND ----	**अनुवाद विज्ञान**	4	0	0	4
HIND ----	**सर्जनात्मक लेखन के विविध आयाम**	4	0	0	4

नोट – चिह्नांकित पाठ्यक्रम में दोनों प्रकार के पाठ्यक्रम – जिनके शीर्षक परिवर्तित किए गए तथा जिनमें आंतरिक परिवर्तन किया गया – सम्मिलित हैं।

वनस्थली विद्यापीठ **संलग्नक 1**

हिन्दी विभाग

एम. ए कार्यक्रम : शैक्षणिक उद्देश्य

वनस्थली विद्यापीठ के पंचमुखी शिक्षा पद्धति के अंतर्गत छात्राओं के बहुमुखी व्यक्तित्व निर्माण हेतु विभाग के स्नातकोत्तर कार्यक्रम में भाषा एवं साहित्य का विस्तृत आलोचनात्मक एवं विश्लेषणपरक अध्ययन कराया जाता है। हिन्दी भाषा के सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक विस्तार, उसके परिष्करण के विशिष्ट सैद्धांतिक नियमों के विश्लेषण के बाद राष्ट्रभाषा बनने और राष्ट्रभाषा बनने के उपरांत प्रयुक्ति परक प्रयोजनमूलक रूप धारण कर विश्वभाषा बनने की संभावनाओं का अध्ययन प्रस्तुत कार्यक्रम में कराया जाता है। भाषाई रूप में हिन्दी के पास भारत की सभ्यता का अथाह संवेदनात्मक कोश मौजूद है। अपनी 17 बोलियों के विकास में युगीन परिस्थितियों का विकासात्मक सहयोग हिन्दी ने स्वयं अर्जित किया है। यही कारण रहा है कि स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्य और साहित्यकारों ने सक्रिय भूमिका निभाई है। जिसका खंडगत और वैज्ञानिक अध्ययन मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में महत्वपूर्ण ही नहीं आवश्यक भी है। हिन्दी भाषा की भांति ही इसके साहित्य ने भी युगीन प्रवृत्तियों को केवल प्रतिबिम्बत ही नहीं किया है, बल्कि उसके परिवर्तन का भी आह्वान किया है। आदिकाल के वीर एवं श्रृंगारपूर्ण रचनाओं के भंडार के बाद लोकजागरण की प्रवृत्ति हिन्दी की इसी क्षमता को दर्शाती है। आधुनिक गद्य विधाओं के माध्यम से नवजागरण भी हिन्दी साहित्य की ही देन रहा है। लगभग 1000 वर्षों का अथाह साहित्य भंडार भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक एकता के साथ ही आधुनिक भारत के निर्माण का साहित्यिक साक्षी रहा है। हिन्दी साहित्य अब प्रवासी साहित्य के माध्यम से विश्व के विभिन्न देशों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। जिसका प्रतिनिधित्यात्मक अध्ययन प्रस्तुत पाठ्यक्रम में निहित है।

हिन्दी विभाग के एम.ए कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –:

- हिन्दी भाषा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ ही भारोपीय भाषा परिवारों में हिन्दी के विकास और स्थान का प्रवृत्तिमूलक अध्ययन कराना।
- देवनागरी लिपि के मानकीकरण तथा संगणक व टंकण अनुरूप उसकी विशिष्ट स्थिति का अध्ययन कराना।
- हिन्दी भाषा का आधुनिक भाषा वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर वैज्ञानिक अध्ययन।
- विभिन्न कालखण्डों में उद्भूत साहित्यिक प्रवृत्तियों, उनके परिप्रेक्ष्य में तत्युगीन राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का अभिज्ञान कराना।
- हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव–विकास, संचार माध्यमों में हिन्दी की भूमिका, समाचार लेखन एवं संपादन के सैद्धांतिक आयामों का अध्ययन कराना।
- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के समीक्षा सिद्धांतों का अध्ययन एवं विशिष्ट समीक्षकों की शैलियों का विश्लेषणात्मक विवेचन कराना।
- भारतीय साहित्य एवं हिन्दीतर भाषाओं के अनूदित साहित्य के अध्ययन से अन्य भारतीय भाषाओं की साहित्यिक परंपरा से परिचित कराना।

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में आये परिवर्तनों का तत्युगीन परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्मक अध्ययन कराना।
- प्रवासी साहित्य के माध्यम से विभिन्न देशों में हिन्दी लेखन से परिचित कराना।
- वैकल्पिक स्वाध्याय के माध्यम से छात्राओं में स्व अध्ययन एवं विश्लेषण की समझ विकसित करना।
- शोध प्रविधि के विभिन्न सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का अभिज्ञान कराना।
- हिन्दी साहित्य में सृजनात्मक लेखन के प्रति छात्राओं में अभिरूचि जागृत करना।
- लघु शोध प्रबंध के माध्यम से शोध की आधारभूमि को तैयार करना।

एम. ए कार्यक्रम : अपेक्षित परिणाम

- **भाषा वैज्ञानिक अभिज्ञान :** हिन्दी भाषा के उद्‌गम की सांस्कृतिक परिस्थितियों के अभिज्ञान के साथ ही आधुनिक भाषा वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर समझ विकसित होगी।
- **साहित्यिक विधाओं का परिज्ञान :** उपरोक्त पाठ्यक्रम के माध्यम से हिन्दी काव्य के साथ ही आधुनिक गद्य की समस्त विधाओं यथा, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना, व्यंग्य, रिपोर्ताज, संस्मरण, जीवनी आदि समस्त विधाओं से परिचय के साथ ही उनके समीक्षात्मक विश्लेषण की क्षमता छात्राओं में विकसित होगी।
- **काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन का ज्ञान :** आलोचना साहित्य की कसौटी मानी जाती है। उपरोक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्राओं में साहित्य की समझ के साथ ही भारतीय काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों एवं पाश्चात्य साहित्यालोचन पद्धतियों के आधार पर विश्लेषण की क्षमता का विकास होगा।
- **स्वाध्याय की प्रवृत्ति :** कार्यक्रम में सम्मिलित स्वाध्याय वैकल्पिक पाठ्यक्रम के माध्यम से उनमें साहित्य की विभिन्न विधाओं के स्वअध्ययन और मनन की प्रवृत्ति बढ़ेगी।
- **साहित्यिक अभिरूचि :** साहित्य न केवल सामाजिक प्रतिबिम्ब होता है, अपितु यह मानव मन के परिष्करण का हेतु होता है। पाठ्यक्रम में चयनित रचनाओं के माध्यम से छात्राओं की साहित्यिक अभिरूचि विकसित होगी।
- **सृजनात्मक क्षमता का विकास :** विधाओं के अध्ययन–मनन एवं विवेचन के माध्यम से छात्राओं में सृजनात्मक क्षमता का उत्पन्न की जाती है। कथात्मक आधार भूमि, विशिष्ट लेखन शैली, अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों का विकास होगा।
- **संचार माध्यमों के अनुरूप लेखन :** पत्रकारिता पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में वर्तमान जनसंचार माध्यमों में समाचार लेखन, संपादन एवं मीडिया के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का अभिज्ञान और लेखन क्षमता विकसित होगी।
- **नैतिक मूल्यों का विकास :** साहित्य के अध्ययन के माध्यम से छात्राओं में नैतिक मूल्यों का विकास होता है। मानवीय गुणों के उत्कृष्ट भावों का संचरण होता है। जो एक स्वस्थ समाज के निर्माण का आधार बनेगा।
- **शोध प्रवृत्ति :** कार्यक्रम में शोध प्रविधि के अध्ययन एवं परियोजना कार्य के तहत लघु शोध प्रबंध तैयार करने से शोध की आधारभूमि की समझ और उसकी व्यावहारिक समस्याओं का ज्ञान होगा।

- **रोजगारोन्मुखता :** हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के साथ ही आधुनिक समय में शैक्षणिक, प्रशासनिक, जनसंचार माध्यमों के अलावा विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार सृजित कर रही है। इसके साथ ही विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी हिन्दी माध्यम के प्रति रूचि की वृद्धि हुई है। पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्राओं को उपरोक्त क्षेत्रों में रोजगारोन्मुखता का लाभ मिलेगा।

पाठ्यक्रम योजना

समसत्र : प्रथम

Existing					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND 401	आधुनिक कविता (छायावाद तक)	5	0	0	5
HIND 402	आदिकालीन काव्य	5	0	0	5
HIND 403	भक्तिकालीन काव्य	5	0	0	5
HIND 408	रीतिकालीन काव्य	5	0	0	5
HIND 407	कथा साहित्य	5	0	0	5
Semester wise Total		25	0	0	25

Proposed					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND 401	आधुनिक कविता (छायावाद तक)	5	0	0	5
HIND 402	आदिकालीन काव्य	5	0	0	5
HIND 403	भक्तिकालीन काव्य	5	0	0	5
HIND 408	रीतिकालीन काव्य	5	0	0	5
HIND 407	कथा साहित्य	5	0	0	5
Semester wise Total		25	0	0	25

समसत्र : द्वितीय

Existing					
Course Code	course name	L	T	P	C
CS421	कम्प्यूटर शिक्षण सैद्धान्तिक (आपाजी संस्थान द्वारा संचालित)	3	0	0	3
CS421L	कम्प्यूटर शिक्षण (आपाजी संस्थान द्वारा संचालित)	0	0	4	2
HIND 404	भारतीय काव्यशास्त्र	5	0	0	5
HIND 405	भाषा विज्ञान	5	0	0	5
HIND 406	हिन्दी भाषा	5	0	0	5
HIND 409	शोध – प्रविधि	5	0	0	5
Semester wise Total		25	0	4	25

Proposed					
Course Code	course name	L	T	P	C
CS421	कम्प्यूटर शिक्षण सैद्धान्तिक	3	0	0	3
HIND 404	भारतीय काव्यशास्त्र	5	0	0	5
HIND 405	**भाषा विज्ञान**	5	0	0	5
	हिन्दी भाषा एवं लिपि	5	0	0	5
HIND 409	शोध – प्रविधि	5	0	0	5
CS421L	कम्प्यूटर शिक्षण (प्रायोगिक)	0	0	4	2
Semester wise Total		25	0	4	25

समसत्र : तृतीय

Existing					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND 501	भारतीय साहित्य	5	0	0	5
HIND 502	छायावादोत्तर कविता	5	0	0	5
HIND 503	हिन्दी नाटक	5	0	0	5
HIND 504	हिन्दी साहित्य का इतिहास	5	0	0	5
HIND 508	पाश्चात्य साहित्यालोचन	5	0	0	5
Semester wise Total		25	0	0	25

Proposed					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND 502	**छायावादोत्तर कविता**	5	0	0	5
HIND 503	हिन्दी नाटक	5	0	0	5
HIND	**हिन्दी आलोचना**	5	0	0	5
HIND 508	पाश्चात्य साहित्यालोचन	5	0	0	5
HIND	**विषयाधारित चयनित पाठ्यक्रम – I**	5	0	0	5
HIND	**स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम – I**	0	0	0	2
Semester wise Total		25	0	0	27

समसत्र : चतुर्थ

Existing					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND 505	हिन्दी उपन्यास (स्वतंत्रता पश्चात्)	5	0	0	5
HIND 506	हिन्दी उपन्यास (स्वतंत्रता पूर्व)	5	0	0	5
HIND 509	पत्रकारिता	5	0	0	5
HIND 507P	परियोजना	0	0	10	5
	वैकल्पिक	5	0	0	5
Semester wise Total		20	0	10	25

Proposed					
Course Code	course name	L	T	P	C
HIND -------	**हिन्दी उपन्यास**	5	0	0	5
HIND --------	**कथेतर गद्य विधाएँ**	5	0	0	5
HIND 509	पत्रकारिता	5	0	0	5
HIND 507P	परियोजना	0	0	10	5
HIND	**चयनित पाठ्यक्रम**	5	0	0	5
HIND	**स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम – II**	0	0	0	2
Semester wise Total		20	0	10	27

Existing **वैकल्पिक समूह**					
HIND 510	विशिष्ट रचनाकार : प्रेमचन्द	5	0	0	5
HIND 511	विशिष्ट रचनाकार : सूरदास	5	0	0	5
HIND 512	विशिष्ट रचनाकार : सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	5	0	0	5

Proposed **विषयाधारित चयनित पाठ्यक्रम समूह**					
HIND 501	भारतीय साहित्य	5	0	0	5
HIND ------	प्रवासी साहित्य	5	0	0	5
HIND 510	विशिष्ट रचनाकार : प्रेमचन्द	5	0	0	5
HIND 511	विशिष्ट रचनाकार : सूरदास	5	0	0	5
HIND 512	विशिष्ट रचनाकार : सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	5	0	0	5

स्वाध्याय वैकल्पिक पाठ्यक्रम समूह					
HIND	**अनूदित साहित्य**	0	0	0	2
HIND	**आत्मकथा, जीवनी और डायरी**	0	0	0	2
HIND	**साहित्य और भारतीय संस्कृति**	0	0	0	2
HIND	**साहित्य और सिनेमा**	0	0	0	2

नोट – चिह्नांकित पाठ्यक्रम में दोनों प्रकार के पाठ्यक्रम – जिनके शीर्षक परिवर्तित किए गए तथा जिनमें आंतरिक परिवर्तन किया गया –सम्मिलित हैं।

वनस्थली विद्यापीठ

हिन्दी विभाग

एम.फिल.कार्यक्रम : शैक्षणिक उद्देश्य **संलग्नक : 3**

वनस्थली विद्यापीठ की शिक्षा पद्धति में छात्राओं के व्यक्तित्व में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक विकास महत्वपूर्ण सोपान होते हैं। जिसके तहत प्रारंभिक से उच्च शिक्षा तक भाषा के विभिन्न परिप्रेक्ष्य के अनुरूप छात्राओं को अध्ययन कराया जाता है। किसी भी विषय का उत्तरोत्तर ज्ञानात्मक विकास संवर्धित होने के उपरांत विस्तार के स्थान पर गहनता की ओर बढ़ता है। उच्च शिक्षा में विषय के अध्ययन, विश्लेषण और विवेचन के उपरांत विशिष्ट अध्ययन और नवीन निष्कर्षों के लिए शोध प्रवृत्ति विकसित की जाती है।

उच्च शिक्षा में शिक्षण कार्य एक विशिष्ट अध्ययन प्रविधि एवं शोधपरक दृष्टिकोण पर आधारित होता है। इसके साथ ही साहित्य निरंतर राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तनों को अनुभूत करता है एवं उनसे प्रभावित होता है, और युगानुरूप अपने विचार, कथ्य, अभिव्यक्ति और शिल्प में परिवर्तन भी करता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य विमर्शमूलक अध्ययन की ओर बढ़ रहा है, विमर्श भी अब दलित और स्त्री तक सीमित न रहकर आदिवासी, किन्नर, वृद्ध, संस्कृति, इतिहास और मीडिया विमर्श तक पहुँच गया है। प्रवासी साहित्य का एक विशाल पक्ष हिन्दी से जुड़ा है जिससे वैश्विक सांस्कृतिक संगम जैसी अवधारणाएँ विकसित हो रही हैं। जिनका अवलोकन और अध्ययन उच्च शिक्षा की छात्राओं के लिए आवश्यक है।

उच्च शिक्षा में शिक्षण के लिए व्याकरण, साहित्य आदि के अध्ययन की नई पद्धतियाँ भी अब अध्यापन में सम्मिलित हो गई हैं। इसके साथ ही कक्षेतर गतिविधियाँ, श्रव्य एवं दृश्य माध्यमों की बढ़ती भूमिका आदि भी वर्तमान समय के अनुरूप अध्यापन का प्रमुख अंग बनती जा रही हैं।

स्नातकोत्तर छात्राओं में स्वतंत्र चिंतन एवं स्वलेखन की प्रवृत्ति विकसित करना आवश्यक होता है। इसके लिए आलेख, शोध पत्र लेखन, पत्र प्रस्तुतिकरण आदि का अभ्यास आवश्यक होता है। उच्च शिक्षा के इन संपूर्ण प्रभागों का समेकित कार्यक्रम एम.फिल में हिन्दी विभाग द्वारा संचालित किया जाता है।

हिन्दी विभाग के एम.फिल कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –:

- उच्च शिक्षा के अनुरूप भाषाई कौशल, अर्थग्रहण एवं अभिव्यक्ति के रूपों से परिचित कराना।
- शोध के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों, आधारभूत तैयारियों से अवगत कराना।
- पाठालोचन एवं पाठ संपादन एवं पुनर्निमाण का अभिज्ञान कराना।
- साहित्यिक शोध की अनुसंगी विधाओं इतिहास, दर्शन, मनोविज्ञान आदि के रूपों से अवगत कराना।
- कथेतर गद्य विधाओं और विमर्शमूलक नवीन साहित्यिक प्रवृत्तियों का अध्ययन कराना।
- आधुनिक समय के अनुरूप नवीन कथ्य एवं शिल्प की प्रविधियों से परिचित कराना।
- उच्च शिक्षा में शिक्षक एवं विद्यार्थी संबंधों के साथ ही विद्यार्थी के विकास में शिक्षक एवं शिक्षण की भूमिका से अवगत कराना।
- नवीन शिक्षण माध्यमों (श्रव्य एवं दृश्य) आदि की शिक्षण में भूमिका, गद्य एवं पद्य शिक्षण की प्रविधियों का अध्ययन कराना।
- लेख, शोध पत्र लेखन, प्रस्तुतिकरण, पत्र वाचन की सूक्ष्मताओं से अवगत एवं अभ्यास कराना।
- परियोजना कार्य के माध्यम से छात्राओं में स्वतंत्र एवं मौलिक चिंतन का विकास करना।
- शिक्षण अभ्यास के माध्यम से व्यावहारिक शिक्षण से परिचित कराना।
- पीएचडी के लिए विस्तृत शोध की आधारभूमि तैयार करना।

एम.फिल कार्यक्रम : अपेक्षित परिणाम

- **शोध प्रविधियों का अभिज्ञान :** उच्च शिक्षा में शोध का पक्ष महत्वपूर्ण होता है। प्रस्तुत कार्यक्रम से छात्राओं में शोध प्रविधियों के सैद्धांतिक पक्ष की जानकारी होगी।
- **साहित्य की अनुसंगी विधाओं की उपयोगिता :** साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज संपूर्ण ज्ञान का पुंज, इसलिए साहित्य के अध्ययन में अनुसंगी विधाओं यथा, इतिहास, मनोविज्ञान, दर्शन आदि के संबंध की समझ छात्राओं में विकसित होगी।
- **नवीन विमर्शमूलक साहित्य रूपों का ज्ञान :** युगानुरूप साहित्यिक परिवर्तन अपने कथ्य एवं शिल्प को भी नवाकार देता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में छात्राएँ नवीन विमर्शों के अध्ययन एवं उनकी आवश्यकताओं से परिचित होंगी।
- **शिक्षण पद्धतियों का अभिज्ञान :** व्याकरण, काव्य एवं गद्य की अलग–अलग शिक्षण पद्धतियाँ होती हैं। जिनके विशिष्ट ज्ञान एवं मूलभूत अंतर से परिचय होगा।
- **शिक्षण अभ्यास :** ज्ञान जब तक आचरण में न ढले, तब तक उसका औचित्य नहीं होता। इसलिए शिक्षण के साथ ही प्रस्तुत पाठ्यक्रम में छात्राओं को कक्षाओं में शिक्षण अभ्यास भी कराया जाता है, जिनके माध्यम से वह कक्षा में अध्यापन के समय होने वाली समस्याओं से परिचित हो सकेंगी।
- **समस्या आधारित विषयों के चयन की समझ :** शोध कार्य समाज में नवीन मान्यताओं को स्थापित करते हैं। छात्राओं में आधुनिक समय की समस्याओं की पहचान और उनके निराकरण के लिए साहित्यिक शोध की समझ विकसित होगी।
- **बहुआयामी व्यक्तित्व :** मौलिक चिंतन एवं लेखन के माध्यम से छात्राओं के व्यक्तित्व में परिवर्तन आता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में शोध पत्रों के लेखन, प्रस्तुतीकरण एवं सेमिनार के माध्यमों से छात्राओं में मौलिक चिंतन की प्रवृत्ति बढ़ेगी और उनका व्यक्तित्व बहुआयामी होगा।
- **शोधपरक दृष्टि** : ज्ञान की उच्चतर भूमि उसके नवीन दृष्टिकोण से संबंधित होती है। प्रस्तुत कार्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में शोधपरक दृष्टिकोण विकसित होगा। जिससे वे सामाजिक व्यवस्था में साहित्यिक अवदान में सक्षम होंगी।

- **सृजनात्मकता :** शोध विशिष्ट अध्ययन का वाहक तो होता ही है, साथ ही यह सृजन क्षमता को भी विकसित करता है। कथेतर विधाओं और विमर्शमूलक अध्ययन के माध्यम से उनमें विभिन्न विधाओं में शोधपरक दृष्टि के साथ ही मौलिक सृजन की क्षमता भी विकसित होगी।
- **स्वाध्याय की प्रवृत्ति :** व्यापक अध्ययन के माध्यम से छात्राओं में स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित होगी।
- **साहित्यिक अभिरूचि :** साहित्य न केवल सामाजिक प्रतिबिम्ब होता है, अपितु यह मानव मन के परिष्करण का हेतु होता है। पाठ्यक्रम में चयनित रचनाओं के माध्यम से छात्राओं की साहित्यिक अभिरूचि विकसित होगी।
- **रोजगारोन्मुखता :** हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के साथ ही आधुनिक समय में शैक्षणिक, प्रशासनिक, जनसंचार माध्यमों के अलावा विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार सृजित कर रही है। इसके साथ ही विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी हिन्दी माध्यम के प्रति रूचि की वृद्धि हुई है। पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्राओं को उपरोक्त क्षेत्रों में रोजगारोन्मुखता का लाभ मिलेगा।

Master of Philosphy (Hindi)
एम.फिल./एम.फिल.–पीएच.डी. (एकीकृत) कार्यक्रम

Semester-I

Course Code	Course Name	L	T	P	C
HIND 607	शोध प्रविधि	4	0	0	4
HIND 609	शिक्षक, शिक्षण एवं उच्च शिक्षा	4	0	0	4
HIND608P	सत्रावधि पत्र	0	0	24	12
HIND 604	साहित्यिक विमर्श	4	0	0	4
	स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम – 1	0	0	0	2
		12	**0**	**24**	**26**

Semester - II

Course Code	Course Name	L	T	P	C
HIND703D	लघु शोध–प्रबंध	0	0	36	18
HIND605S	सेमिनार	0	0	8	4
	स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम – 2	0	0	0	2
	स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम – 3	0	0	0	2
		0	**0**	**44**	**26**

स्वाध्यायाधारित पाठ्यक्रम समूह		L	T	P	C
HIND 601R	हिन्दी कहानी का अध्ययन	0	0	0	2
HIND 602 R	हिन्दी उपन्यास का अध्ययन	0	0	0	2
HIND 701 R	आधुनिक कथेतर गद्य विधाएँ	0	0	0	2
HIND 702 R	हिन्दी निबंध	0	0	0	2
HIND ---	यात्रा साहित्य	0	0	0	2
HIND ----	लोक साहित्य	0	0	0	2

Board of Studies in the Department of Hindi
Changes done in the scheme of Examination and Courses of Study

M.Phil Examination **संलग्नक : 2**

एम. फिल कार्यक्रम प्रथम समसत्र					
sr. no.	**Course code/ Name**	**Learning Outcome**	**Existing Scheme/Syllabus**	**Suggested changes**	**Remarks**
1	**HIND 607 शोध प्रविधि**	**अपेक्षित परिणाम–** 1. इस पाठ्यक्रम के द्वारा छात्राओं को शोधविषयक सर्वांगीण जानकारी प्राप्त तो होगी ही साथ ही आलोचनात्मक दृष्टि भी प्रखर होगी। 2. शोध प्रविधि से साहित्य का अध्ययन करने में समर्थ होंगी। 3. छात्राओं की तुलनात्मक दृष्टि का विकास होगा। 4.शोध–पत्र लेखन		**शोध की वैज्ञानिक दृष्टि** : शोध का स्वरूप, अनुसंधान और आलोचना, शोध के प्रकार। **शोध प्रकिया** : विषय निर्वाचन, रूपरेखा निर्माण सामग्री संकलन, चयन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण, संदर्भ लेखन, उद्धरण , पाद टिप्पणी, अनुक्रमणिका। **पाठालोचन** : परिभाषा, क्षेत्र, स्वरूप एवं स्रोत, पाठ विकृतियाँ , प्रतियों का संबंध निर्माण, पाठ का पुनर्निर्माण और पाठ सम्पादन। **हिन्दी में शोध कार्य** : हिन्दी में शोध का इतिहास, हिन्दी में शोध की विभिन्न पद्धतियाँ। **साहित्यिक शोध की अनुसंगी विधाएँ** : इतिहास, समाजशास्त्र, दर्शन, मनोविज्ञान, सौंदर्यशास्त्र शोधार्थी के अपेक्षित गुण, निर्देशक–शोधार्थी संबंध। **सहायक ग्रन्थ** :	

		व शोध–प्रबंध लेखन की पद्धति से परिचित हो सकेंगी । 5. विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी यह अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा।		1. सहगल, मनमोहन, (1919), *हिन्दी शोध तंत्र की रूपरेखा,* जयपुर, पंचशील प्रकाशन। 2. सिंहल, वैद्यनाथ, (1980), *शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि,* दिल्ली, मैकमिलन प्रकाशन। 3. रानावत, चन्द्रभान, डॉ. अनुकुमार, (1979), *शोध प्रविधि और प्रकिया,* मथुरा, जवाहर पुस्तकालय। 4. गुप्त, माताप्रसाद, सिन्हा सावित्री व स्नातक विजयेन्द्र, (1960), *अनुसंधान प्रकिया,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस। 5. खण्डेलवाल, रामेश्वर, (1967), *शोध तंत्र और दृष्टि,* गुजरात, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी। 6. सिंह, शशिभूषण, (2006), *शोध प्रविधि,* नई दिल्ली, हिन्दी बुक सेन्टर। 7. सिंह, कन्हैया, (2017), *हिन्दी पाठानुसंधान,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन । 8. शर्मा, विनय मोहन, (1997), *शोध प्रविधि,* नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस । 9. सिंह, विजयपाल, (1964), *हिन्दी अनुसंधान का विवेचन,* दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार। 10. जैन, रवीन्द्र कुमार, (1984), *साहित्यिक अनुसंधान के आयाम,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस। 11. ओमप्रकाश, (1981), *अनुसंधान की समस्याएं,* नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो।	

एम. फिल कार्यक्रम प्रथम समसत्र					
sr. no.	Course code/ Name	Learning Outcome	Existing Scheme/Syllabus	Suggested changes	Remarks
2	HIND 609 शिक्षक, शिक्षण एवं उच्च शिक्षा	**अपेक्षित परिणाम** 1.उच्च कक्षाओं के अध्यापन हेतु छात्राओं के भाषाई कौशल का विकास होगा। 2.व्याकरण एवं साहित्य अध्यापन की विभिन्न पद्धतियों का ज्ञान हो सकेगा। 3.अनुवाद के विविध प्रकारों के अध्ययन से छात्राएँ इस क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं से परिचित हो सकेंगी। 4.कक्षा में छात्राओं के साथ संबंधों के विस्तार और उचित सहयोग में मदद मिलेगी। 5.श्रव्य एवं दृश्य		**शिक्षा की मूलभूत अवधारणाएँ**–हिन्दी भाषा शिक्षण की अवधारणा, उच्च शिक्षा के माध्यम की समस्या एवं हिन्दी, भाषाई कौशल–अर्थग्रहण व अभिव्यक्ति। **उच्च शिक्षा में हिन्दी शिक्षक**– शिक्षक एवं विद्यार्थी : परस्पर संबंध, विद्यार्थी के समग्र विकास में शिक्षक की भूमिका, शिक्षण, शोध एवं विस्तार। **भाषा शिक्षण**–मातृ भाषा शिक्षण के उद्देश्य, अन्य भाषा शिक्षण के उद्देश्य, भाषा शिक्षण की विविध पद्धतियाँ। **व्याकरण एवं साहित्यिक विधा शिक्षण**–व्याकरण शिक्षण की पद्धतियाँ, कविता शिक्षण की पद्धतियाँ, गद्य शिक्षण की पद्धतियाँ। **हिन्दी भाषा शिक्षण को रूचिकर बनाने वाले साधन एवं गतिविधियाँ** : दृश्य एवं श्रव्य साधन, गतिविधियाँ : साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ : अर्थ एवं महत्त्व। **सहायक पुस्तकें–** 1. अग्रवाल, डॉ. मुकेश, (2004), *हिन्दी भाषा शिक्षण,* गाजियाबाद, के. एफ. पचौरी प्रकाशन। 2. गुप्त, मनोरम, (1981), *भाषा शिक्षण–सिद्धान्त*	

		साधनों के उपयोग से एक कुशल शिक्षक बन सकेंगी।		*और प्रविधि,* आगरा, हिन्दी केन्द्रीय संस्थान। 3. भाटिया, कैलाशचन्द्र, (2001), *आधुनिक भाषा शिक्षण,* दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन। 4. तिवारी, डॉ. भोलानाथ, (1980), *हिन्दी भाषा शिक्षण,* दिल्ली, लिपि प्रकाशन। 5. पाठक, डॉ. आर. पी., (2011), *हिन्दी भाषा शिक्षण,* नई दिल्ली, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स। 6. जीत, योगेन्द्र, (1961), *हिन्दी भाषा शिक्षण,* आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर। 7. श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ, (2017), *भाषा शिक्षण,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन। 8. चौहान, रीता, (2017), *हिन्दी शिक्षण,* आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।	

एम. फिल कार्यक्रम प्रथम समसत्र					
sr. no.	Course code/ Name	Learning Outcome	Existing Scheme/Syllabus	Suggested changes	Remarks
3	**HIND 608 P** **सत्रावधि पत्र**	**अपेक्षित परिणाम :** 1.छात्राओं में विषयपरक चिंतन और मौलिक लेखन की क्षमता विकसित होगी। 2.शोध पत्र लेखन के तकनीकी पक्ष से परिचित हो सकेंगी। 3.संदर्भ पुस्तकों के अवलोकन से अध्ययन क्षमता में विस्तार हो सकेगा। 4.नवीन विमर्श आधारित साहित्यिक विषयों की समझ बढ़ेगी।		विभागीय अध्यापक के मार्गदर्शन में विद्यार्थी को एक सत्रावधि पत्र तैयार करना होगा। सत्रावधि पत्र का विषय लघु शोध प्रबंध के विषय से ही संबंधित रहेगा। समसत्र के अंत में परीक्षक मंडल के द्वारा इसका मूल्यांकन किया जायेगा।	

4	**HIND 604** **साहित्यिक विमर्श**	**अपेक्षित परिणाम –** 1.साहित्यिक क्षेत्र में विभिन्न सामाजिक आंदोलनों की भूमिका एवं उनके महत्व को समझ सकेंगी। 2.साहित्य की सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक परिवेश में महत्ता से अवगत होंगी। 3.हाशिये पर पड़े लोगों की आवाज, उनके प्रश्नों को मुख्यधारा में लाने में साहित्य की भूमिका से अवगत होंगी। 4.साहित्य को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझने एवं परखने की समझ विकसित कर सकेंगी। 5.शोध के लिए नवीन विषयों का चयन करने में समर्थ हो सकेंगी।		**दलित विमर्श:** अवधारणा व प्रयोजन, दलित आंदोलन : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (अम्बेडकर, फुले व गांधी), दलित साहित्य : बुनियादी सरोकार। **नारी विमर्श** : अवधारणा, नारी मुक्ति आंदोलन, भारतीय पाश्चात्य–दृष्टियाँ व मुद्दे, भारतीय समाज और नारी। **आदिवासी विमर्श** : अवधारणा, आदिवासी आंदोलन (जल, जंगल, जमीन और अस्मिता का प्रश्न) **विमर्श मूलक कथा साहित्य**–ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, मोहनदास नैमिशराय, नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा मुद्गल, राजेन्द्र अवस्थी, संजीव, वीरेन्द्र, **विमर्श मूलक अन्य विधाएँ**– तुलसीराम, डॉ॰ धर्मवीर, मीराकांत, महादेवी वर्मा, प्रभा खेतान, सविता सिंह, कौशल्या वैसन्ती, रमणिका गुप्ता। **सहायक ग्रन्थ** : 1. सिंह, एन, (2005), *दलित साहित्य और युग बोध*, गाजियाबाद, लता साहित्य सदन। 2. बरठे, चन्द्रकुमार, (1997), *दलित साहित्य आन्दोलन*, जयपुर, रचना प्रकाशन। 3. कर्दम, जयप्रकाश, (2004), *जातिः एक विमर्श*, हापुड़, मुहिम प्रकाशन। 4. माताप्रसाद, (2004), *दलित साहित्य में प्रमुख*	

				विधाएँ, गाजियाबाद, आकाश प्रकाशन। 5. कुमार, राकेश, (2001), *नारीवादी विमर्श,* पचकुला हरियाणा, आधार प्रकाशन। 6. खेतान, प्रभा, (अनुवादक), (2002), *स्त्री उपेक्षिता,* नई दिल्ली, हिन्दी पाकेट बुक्स। 7. गुप्ता, रमणिका, (2000), *स्त्री विमर्श,* दिल्ली, शिल्पायन। 8. चतुर्वेदी, जगदीश, (2002), *आदिवासी और नई शताब्दी,* नई दिल्ली, स्वर्ण जयंती प्रकाशन। गुप्ता, रमणिका, (2013), *आदिवासी अस्मिता का संकट,* नई दिल्ली, सामयिक प्रकाशन। **ई–सामग्री स्रोत –** 1. https://epgp.inflibnet.ac.in/	

एम. फिल कार्यक्रम प्रथम समसत्र					
sr. no.	Course code/ Name	Learning Outcome	Existing Scheme/Syllabus	Suggested changes	Remarks
5	HIND स्वाध्याया धारित चयनित पाठ्यक्रम –1			छात्राओं को स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम समूह में से किसी एक पाठ्क्रम का चयन करना होगा ।	

द्वितीय समसत्र					
sr. no.	Course code/ Name	Learning Outcome	Existing Scheme/Syllabus	Suggested changes	Remarks
1.	HIND 703D लघु शोध–प्रबंध	**अपेक्षित परिणाम** 1. छात्राओं को भावी शोध के लिए उचित जानकारी मिल सकेगी। 2. छात्राएँ शोध –प्रबन्ध लेखन के आवश्यक तत्वों से परिचित हो सकेगी। 3. छात्राओं में रचनाओं के आलोचनात्मक मूल्यांकन की प्रवृत्ति विकसित हो सकेगी। 4. छात्राएँ पत्र व आलेख लेखन तथा प्रस्तुतिकरण की शैली परिचित हो सकेगी।		छात्रा कम से कम 100 पृष्ठों का लघु शोध–प्रबन्ध सत्रीय परीक्षा से पूर्व जमा करेगी जिसे मूल्यांकन हेतु बाह्य विशेषज्ञ को भेजा जाएगा।	

sr. no.	**Course code/ Name**	**Learning Outcome**	**Existing Scheme/Syllabus**	**Suggested changes**	**Remarks**
2	**HIND - सेमिनार**	**अपेक्षित परिणाम :** 1.छात्रा में विमर्श परक अध्ययन पर पत्र लेखन की क्षमता विकसित होगी। 2.पत्र प्रस्तुति के माध्यम से छात्रा में वाचन कौशल की क्षमता बढ़ सकेगी। 3.मौलिक अध्ययन एवं मौलिक लेखन की क्षमता विकसित हो सकेगी। 4.संदर्भ पुस्तकों के माध्यम से अध्ययन की प्रवृत्ति बढ़ाई जा सकेगी।		विभागीय अध्यापक के मार्गदर्शन में विद्यार्थी को एक सेमिनार शोध पत्र की प्रस्तुति संकाय सदस्यों के समक्ष देनी होगी।शोध पत्र का विषय लघु शोध प्रबंध के विषय से ही संबंधित रहेगा। समसत्र के अंत में परीक्षक मंडल के द्वारा इसका मूल्यांकन किया जायेगा।	
sr.	**Course code/**	**Learning Outcome**	**Existing Scheme/Syllabus**	**Suggested changes**	**Remarks**

no.	Name				
3	HIND स्वाध्याया धारित चयनित पाठ्यक्रम –2			छात्राओं को स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम समूह में से किसी एक पाठ्क्रम का चयन करना होगा ।	

sr. no.	Course code/ Name	Learning Outcome	Existing Scheme/Syllabus	Suggested changes	Remarks
4	HIND स्वाध्याया धारित चयनित पाठ्यक्रम –3			छात्राओं को स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम समूह में से किसी एक पाठ्क्रम का चयन करना होगा ।	

स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम समूह					
sr. no.	Course code/ Name	Learning Outcome	Existing Scheme/Syllabus	Suggested changes	Remarks
1	**HIND 601 R हिंदी कहानी का अध्ययन**	**अपेक्षित परिणाम–** 1.भारतीय नवजागरण एवं हिन्दी कहानी के उद्भव से परिचित हो सकेंगी। 2.हिन्दी कहानी के निरंतर बदलते स्वरूप को समझ सकेंगी। 3.विविध कहानी आंदोलनों की जानकारी ग्रहण कर सकेंगी। 4.हिन्दी कहानीकारों की विशिष्टताओं व कथ्य–शैली के सन्दर्भ में व्यापक दृष्टि विकसित कर सकेंगी। 5.शोध के लिए नए क्षेत्र का चयन व विस्तृत समझ		**राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी कहानी** : आधुनिक शिक्षा व्यवस्था, मध्यवर्ग का विकास, सुधारवादी आंदोलनों का प्रभाव। **प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी** – पूर्व प्रेमचंद युग की कहानियों का प्रवृत्यात्मक अध्ययन, प्रेमचन्द का कहानी साहित्य, प्रेमचन्द और प्रसाद की परम्परा के युगीन कहानीकार । **प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी** – समाज से व्यक्ति केन्द्रित रचनाधर्मिता के प्रति झुकाव, यथार्थवाद का विकास और उसकी पृष्ठभूमि, अज्ञेय, जैनेन्द्र, यशपाल और रांगेय राघव की कहानियों का प्रवृत्यात्मक अध्ययन। **नयी कहानियों का अध्ययन–** एतदयुगीन सामाजिक एवं साहित्यिक परिदृश्य, नयी कहानी की प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कहानीकार–मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर। **समकालीन कहानी–** मध्यवर्गोन्मुखी व्यक्तिवाद और विकृतियों के कहानीकार–उषा प्रियम्वदा, मृदुला गर्ग, निर्मल वर्मा, रवीन्द्र कालिया, सामाजिक सरोकारों के कहानीकार–मन्नू भण्डारी, शिवप्रसाद सिंह, अमरकांत, व्यवस्था परिवर्तन के कहानीकार – रमेश उपाध्याय, उदय प्रकाश।	

		विकसित कर पाएगी।		**सहायक ग्रन्थ–** 1. मदान, इन्द्रनाथ, (1976), *आज की कहानी,* इलाहबाद, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन। 2. सिंह, नामवर, (2006), *कहानीः नई कहानी,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन। 3. कमलेश्वर, (2015), *नई कहानी की भूमिका,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन। 4. विमल, गंगाप्रसाद, (1967), *समकालीन कहानी का रचना विधान,* दिल्ली, सुषमा पुस्तकालय। 5. सिन्हा, सुरेश, (2017), *हिन्दी कहानी उद्भव और विकास,* लखनऊ, रामा प्रकाशन । 6. यादव, राजेन्द्र, (1986), *कहानी स्वरूप और संवेदना,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन। 7. लाल, लक्ष्मी नारायण, (1989), *आधुनिक हिन्दी कहानी (जैनेन्द्र से नई कहानी तक),* दिल्ली, वाणी प्रकाशन। 8. श्रीवास्तव, परमानन्द, (1965), *हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया,* कानपुर, कानपुर ग्रन्थ प्रकाशन। 9. राय, गोपाल, (2016), *हिन्दी कहानी का इतिहास,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन। 10. डॉ. हरदयाल, (2017), *हिन्दी कहानी परम्परा और प्रगति,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन। **ई–सामग्री स्रोत –** 2. https://epgp.inflibnet.ac.in/ 3. https://egyankosh.ac.in/	

sr. no.	Course code/ Name	Learning Outcome	Existing Scheme/Syllabus	Suggested changes	Remarks
2	**HIND 602 R हिन्दी उपन्यास का अध्ययन (भारतेन्दु युग से 2000 तक)**	**अपेक्षित परिणाम–** 1. भारतीय नवजागरण के सन्दर्भ में हिन्दी उपन्यास के विकास को समझ सकेंगी। 2. स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान लिखे उपन्यासों में अभिव्यक्त युग परिवेश से उपन्यास विधा के महत्व से परिचित होंगी। 3. स्वाधीनता पश्चात् के व्यापक संदर्भों के माध्यम से भारतीय उपन्यास विधा के विशिष्ट स्वरूप को समझ पायेंगी। 4. शोध के लिए व्यापक पृष्ठभूमि व समझ विकसित कर सकेंगी।		**राष्ट्रीय नवजागरण और हिन्दी गद्य का विकास** : उपन्यास विधा के उद्भव की भारतीय परिस्थितियाँ (औद्योगिक व्यवस्थाएँ, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था, भारतीय मध्यवर्ग, पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका) सुधरवादी आंदोलनों का साहित्य पर प्रभाव। **पूर्व प्रेमचंद हिन्दी उपन्यास का चरित्र (1880–1915)** उपन्यास की कुछ विशिष्ट धाराएँ (सामाजिक उपन्यास, तिलिस्मी और ऐयारी उपन्यास, जासूसी उपन्यास) प्रमुख उपन्यासकार–लाला श्रीनिवासदास, बालकृष्ण भट्ट, देवकीनंदन खत्री, गोपालराम गहमरी, किशोरीलाल गोस्वामी। **प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यास**– प्रेमचन्द युग की सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ, प्रेमचन्द की उपन्यास कला, अन्य उपन्यासकार–जयशंकर प्रसाद, आचार्य चतुरसेन शास्त्री। **प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास**– प्रेमचंदोत्तर उपन्यास की प्रवृत्तियाँ, प्रेमचंद की परम्परा–सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास, व्यक्तिवादी एवं	

				मनोविश्लेषणवादी उपन्यास, प्रमुख उपन्यासकार–जैनेन्द्र, यशपाल, अज्ञेय। **स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास 1948–2000** – स्वाधीन भारत में नगरीय परिवेश, ग्रामीण परिवेश में नए परिवर्तन, प्रमुख उपन्यासकार – नागार्जुन,रेणु, कमलेश्वर, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, चित्रा मुद्गल। **सहायक ग्रंथ–** 1. मदान, इन्द्रनाथ, (1970), *आज का हिन्दी उपन्यास,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन। 2. वार्ष्णेय, डॉ. लक्ष्मीसागर, (1970), *हिन्दी उपन्यास उपलब्धियाँ,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन। 3. मिश्र, रामदरश, (2016), *हिन्दी उपन्यास एक अंतर्यात्रा,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन। 4. सिन्हा, सुरेश, (1965), *हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास,* दिल्ली, अशोक प्रकाशन। 5. सिंह, कुँवरपाल, (1976), *हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना,* दिल्ली, पाण्डुलिपि प्रकाशन। 6. शर्मा, रामविलास, (2000), *प्रेमचन्द और उनका युग,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन। 7. मोहन, नरेन्द्र, (1975), *आधुनिक हिन्दी उपन्यास,* दिल्ली, मैकमिलन प्रकाशन। 8. गुप्त, ज्ञानचन्द, (2012), *आंचलिक उपन्यास अनुभव और दृष्टि,* दिल्ली, राधाकृष्ण	

				प्रकाशन। 9. श्रीवास्तव, शिवनारायण, (1951), *हिन्दी उपन्यास,* बम्बई, सरस्वती मन्दिर। 10. राय, गोपाल, (2014), *हिन्दी उपन्यास का इतिहास,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन। 11. मधुरेश, (2017), *हिन्दी उपन्यास का विकास,* इलाहबाद, लोकभारती प्रकाशन। **ई–सामग्री स्रोत –** 1. https://epgp.inflibnet.ac.in/ 2. https://egyankosh.ac.in/	

sr. no.	Course code/ Name	Learning Outcome	Existing Scheme/Syllabus	Suggested changes	Remarks
3	**HIND 701R आधुनिक कथेतर – गद्य विधाएँ**	**अपेक्षित परिणाम -** 1. छात्राओं की आलोचनात्मक दृष्टि प्रखर होगी। 2.आधुनिक कथेतर गद्य विधाओं के अध्ययन से साहित्य की समझ विकसित होगी। 3.छात्राओं में तुलनात्मक दृष्टि विकसित होगी। 4.शोध हेतु नवीन विषयों की जानकारी प्राप्त होगी। 5.विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी यह अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा।		**संस्मरण–**संस्मरण का स्वरूप, संस्मरण और रेखाचित्र का साम्य और वैषम्य, हिन्दी का संस्मरण साहित्य प्रमुख संस्मरणकार–श्रीराम शर्मा, रामधारी सिंह 'दिनकर'। **रेखाचित्र** – रेखाचित्र का स्वरूप, हिन्दी रेखाचित्र साहित्य, प्रमुख रेखाचित्रकार–महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी। **आत्मकथा**– आत्मकथा का स्वरूप, आत्मकथा और जीवनी में साम्य और वैषम्य, हिन्दी का आत्मकथा साहित्य। **जीवनी** – जीवनी का स्वरूप, हिन्दी का जीवनी साहित्य, प्रमुख जीवनीकार–अमृतराय, विष्णु प्रभाकर। **डायरी** – डायरी का स्वरूप, हिन्दी का डायरी साहित्य, प्रमुख डायरी लेखक–रामधारी सिंह 'दिनकर' , मुक्तबोध। **सहायक ग्रन्थ:** 1. तिवारी, रामचन्द्र, (2015), *हिन्दी का गद्य साहित्य,* वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन। 2. गुप्त, गणपतिचन्द्र, (2015), *साहित्यिक निबन्ध,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन। 3. असद, माजदा, (1986), *हिन्दी गद्य की विधाएँ,* नई दिल्ली, ग्रन्थ अकादमी। 4. सिंहल, शशिभूषण, (2002), *हिन्दी साहित्य विधाएँ और दिशाएँ,* दिल्ली, आधुनिक प्रकाशन। 5. भाटिया, कैलाशचन्द्र, (1979), *हिन्दी साहित्य की नवीन विधाएँ,* दिल्ली, युनाईटेड बुक	

				हाउस। 6. शर्मा, हरवंशलाल, (1994), *हिन्दी रेखाचित्र,* दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन। 7. खन्ना, शांति, (1973), *आधुनिक हिन्दी का जीवनीपरक साहित्य,* दिल्ली, सन्मार्ग प्रकाशन। 8. सिंह, कमलेश, *हिन्दी आत्मकथाः स्वरूप एवं साहित्य,* नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस। **ई–सामग्री स्रोत –** 1. https://epgp.inflibnet.ac.in/ 2. https://egyankosh.ac.in/	

sr. no.	Course code/ Name	Learning Outcome	Existing Scheme/Syllabus	Suggested changes	Remarks
4	**HIND 702R हिन्दी निबंध**	**अपेक्षित परिणाम :** 1.छात्राएँ साहित्य की निबंध विधा से परिचित हो सकेंगी। 2.निबंध के उद्भव एवं विकास के साथ विभिन्न युगीन परिस्थितियों में निबंध विधा के बदलावों और उसकी विशेषताओं से परिचित हो सकेंगी। 3.निबंध विधा के अध्ययन से छात्राओं के चिंतन में वस्तुनिष्ठता की क्षमता विकसित होगी। 4.विषयनिष्ठ लेखन और तथ्य निरूपण की क्षमता विकसित हो सकेगी।		**निबन्ध का स्वरूप एवं विवेचन**–निबन्ध विषयक अवधारणाएँ,निबंध के तत्त्व निबंध के प्रकार, निबंध तथा अन्य साहित्यिक विधाएँ। **हिन्दी निबंध का विकास काल**–भारतेन्दु युग–प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं निबंधकार–बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र। **हिन्दी निबंध का विकास काल**–द्विवेदी युग–प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं निबंधकार–महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकुन्द गुप्त, माधवप्रसाद मिश्र, पूर्णसिंह। **हिन्दी निबंध का उत्कर्ष काल**–शुक्ल युग–प्रमुख प्रवृत्तिया एवं निबंधकार, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्यामसुंदर दास, गुलाबराय। **हिन्दी निबंध की नई दिशा**–शुक्लोत्तर युग–प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं निबंधकार–हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, कुबेरनाथ राय। **सहायक ग्रंथ** : 1. तिवारी, रामचन्द्र, (1992), *हिन्दी का गद्य साहित्य,* वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन। 2. सक्सेना, द्वारिका प्रसाद, (1983), *हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार,* आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर। 3. अग्रवाल, जनार्दन स्वरूप, (2013), *हिन्दी में निबंध साहित्य,* प्रयाग, साहित्य भवन प्रकाशन।	

				4. गुप्त, सुरेशचंद्र, (1957), *हिन्दी गद्य साहित्य,* दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार। 5. देशवाल, संतराम, (1998), *हिन्दी ललित निबंध स्वरूप एवं मूल्यांकन,* दिल्ली, प्रेम प्रकाशन। 6. शर्मा, ओंकारनाथ, (1964), *हिन्दी निबंध का विकास,* कानपुर, अनुसंधान प्रकाशन। **ई–सामग्री स्रोत –** 1. https://epgp.inflibnet.ac.in/ 2. https://egyankosh.ac.in/	

sr. no.	Course code/ Name	Learning Outcome	Existing Scheme/Syllabus	Proposed	Remarks
5	HIND यात्रा–साहित्य	**अपेक्षित परिणाम–** 1.यात्रा साहित्य के क्षेत्र में शोध–दृष्टि विकसित होगी । 2.यात्रा साहित्य के अध्ययन द्वारा सृजनात्मक मानसिकता का विकास होगा । 3.यात्रा संस्मरण लेखन–कौशल का विकास होगा । 4.यात्रा साहित्यकारों से परिचित हो कर साहित्य व समाज के प्रति संवेदनशील होंगी । 5.भारतीय व पाश्चात्य यात्रा अनुभव द्वारा नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों का विकास होगा ।		**यात्रा–साहित्य :** सैद्धांतिक स्वरुप – यात्रा और यात्रा साहित्य, यात्रा–साहित्य के प्रमुख तत्व–व्यक्तित्व, विषयवस्तु, शिल्प **यात्रा–साहित्य का वर्गीकरण :** वर्गीकरण के आधार दृदेशगत आधार, उद्देश्यगत आधार, रचनागत आधार, साधन गत आधार, शैली गत आधार **हिंदी यात्रा–साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि –**भारतीय संस्कृति, विदेशी संस्कृति **हिंदी का यात्रा–साहित्य का विकास :** स्वतंत्रता पूर्व यात्रा–साहित्य, स्वतंत्रता पश्चात् का यात्रा–साहित्य **यात्रा– साहित्य के प्रमुख रचनाकार :** भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, सत्यदेव परिव्राजक, राहुल सांकृत्यायन, अज्ञेय, विष्णु प्रभाकर, निर्मल वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, मोहन राकेश **सहायक ग्रन्थ –** 1 शर्मा, डॉ. प्रतापलाल ,(2003), *हिंदी का आधुनिक यात्रा–साहित्य* ,मथुरा ,अमर प्रकाशन 2. उप्रेती, डॉ. रेखा प्रवीण, (2000), *हिंदी का यात्रा–साहित्य (सन 1960 से 1990 तक),* नई दिल्ली, हिंदी बुक सेंटर 3. भाटिया, डॉ. कैलास चन्द्र, भाटिया ,रचना , (1996) ,*साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएं,* नई दिल्ली ,तक्षशिला प्रकाशन 4. तवारी, डॉ. रामचंद्र, (1968), *हिंदी का गद्य*	New Course

				साहित्य, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन 5. माथुर, डॉ. सुरेन्द्र, (1962), *यात्रा–साहित्य का उद्‌भव और विकास* , दिल्ली ,साहित्य प्रकाशन 6. सांकृत्यायन, राहुल, *(*1949), *घुमक्कड़ शास्त्र* ,नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन **ई–सामग्री स्रोत –** https://epgp.inflibnet.ac.in/ https://egyankosh.ac.in/	

sr. no.	Course code/ Name	Learning Outcome	Existing Scheme/Syllabus	Suggested Proposed	Remarks
6	HIND लोक–साहित्य	**अपेक्षित परिणाम –** 1.लोक व अभिजात्य संस्कृति के अंतर को समझने नैतिक विकास होगा। 2.लोक संस्कृति व साहित्य के क्षेत्र में शोध–कार्य के प्रति रुचि जाग्रत होगी। 3.लोकसाहित्य कैसे समाजविज्ञान की अन्य शाखाओं से प्रभावित होता है और साथ में करता भी है, इसकी स्पष्ट समझ छात्राएं बना पाएँगी। 4.प्राच्य व पाश्चात्य लोकसंस्कृति के तुलनात्मक अध्ययन में समर्थ हो पाएँगी। 5.लोकसाहित्य की अध्ययन पद्धतियों		**लोक साहित्य : स्वरुप एवं महत्व**– लोक साहित्य रू लक्षण, परिभाषा, क्षेत्र एवं महत्व , लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य, लोक संस्कृति या लोकवार्ता **लोकसाहित्य की प्रमुख विधाएं(सामान्य परिचय)**–लोकगीत, लोकगाथा, लोककथाएं, लोक नाट्य, प्रकीर्ण साहित्य (लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली) **लोक साहित्य का अन्य समाज विज्ञानों से सम्बन्ध** – समाजशास्त्र, भाषाविज्ञान, इतिहास, पुरातत्व, मनोविज्ञान, धर्मशास्त्र एवं दर्शन **लोकसाहित्य विषयक अध्ययन** –पश्चिम में लोक संस्कृति का अध्ययन, भारत में लोक संस्कृति का प्रारंभिक अध्ययन **लोकसाहित्य की अध्ययन पद्धतियाँ एवं संकलन विधि** – लोक साहित्य के विविध सम्प्रदाय, लोक साहित्य के अध्ययन की प्रमुख पद्धतियाँ, लोक साहित्य की संकलन विधि **सहायक ग्रन्थ–** 1. कल्ला, डॉ. नन्दलाल , (2014), *हिंदी का प्रादेशिक लोक साहित्य शास्त्र* ,जोधपुर ,राजस्थानी ग्रंथागार प्रकाशन 2. गौतम, डॉ. सुरेश, (2015), *लोक साहित्य अर्थ और व्याप्ति* ,नयी दिल्ली, संजय प्रकाशन 3. नेगी ,डॉ. संजीव सिंह व डोभाल, डॉ. कुसुम डोभाल, (2006) *लोक साहित्य के सिद्धांत और गढवाली लोक साहित्य का सन्दर्भ*, दिल्ली, नवराज प्रकाशन	New Course

		व संकलन विधियों की जानकारी करने पर शोध कार्य सुगम होगा।		4. मेनारिया, डॉ. मोतीलाल, (1999), *राजस्थानी भाषा और साहित्य,* जोधपुर, राजस्थानी ग्रंथागार प्रकाशन 5. जैन, श्रीचन्द्र, (1977), *लोक–कथा विज्ञान,* जयपुर ,मंगल प्रकाशन 6. डॉ. सत्येन्द्र, (2006), *लोकसाहित्य विज्ञान,* जोधपुर, राजस्थानी ग्रंथागार प्रकाशन 7. शर्मा, श्रीराम, (2009), *लोक साहित्य का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन* , दिल्ली, निर्मल पब्लिकेशन 8. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव, (2008), *लोक साहित्य की भूमिका* , इलाहाबाद, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड 9. मिश्र, डॉ. ताराकांत, (2008), *मैथिली लोक साहित्य का अध्ययन* , दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस 10. कल्ला, डॉ. नन्दलाल, (2014), *राजस्थानी लोक साहित्य,* जोधपुर, राजस्थानी ग्रंथागार प्रकाशन **ई–सामग्री स्रोत –** 1. https://epgp.inflibnet.ac.in/	

Verified

Offg. Secretary
Banasthali Vidyapith
P.O. Banasthali Vidyapith
Distt. Tonk (Raj.)-304022